।। श्रीमत् त्रिपुर सुन्दर्यै नमः।। श्री गणे ाय नमः।।श्रीवेदपुरुषाय नमः।।

मन्त्र संग्रह

लेखकः

भागवत प्रवक्ता

आचार्य धीरेन्द्र

श्री त्रिपुर सुन्दरी शक्ति समिति (रजि.)

कान्हा दर्शन ज्योतिष केन्द्र

117 गोविन्द खण्ड झिलमिल कालोनी (नियर गुरुद्वारा)

शाहदरा दिल्ली-95

संपर्क सूत्रः 9871662417, 9210067801

Email : dpkanha@gmail.com

Web : www.acharyadhirendra.com

Web : www.tripursundri.org

email : info@tripursundri.org

समर्पणः

है कल्प अनन्त कोटि मम नयन मातु तेरे चरणो में।
यह वस्तु आपकी है माता अर्पण करदी आपके चरणों में।।

मम दास धीरेन्द्र की तुच्छ भेंट माँ जगदम्बे स्वीकार करो।
जो त्रुटियाँ हों इस सेवक की माँ उनका स्वयं सुधार करो।।

तुच्छ भेंट अर्पण करूँ तब तेरे चरणों मे मात्
धीरेन्द्र तेरे दास का शत् शत् कोटि प्रणाम्॥

माते! जगदम्बिकायाः चरणकमलयोः
इदं "श्रीजानकीस्तवराजः" संग्रहीतस्य सादरं समर्पणमस्ति।।

।। इति ।।

आचार्यश्री का एक परिचय

आचार्य या गुरु श्रोत्रीय हो व ब्रह्मनिष्ठ भी यह शास्त्र आज्ञा है।

वैदिक संस्कृत परम्परा की विलक्षण वाक् धारा की उत्ताल उर्मि के रसमय एवं भावमय

वाहक श्रद्धेय आचार्य श्री धीरेन्द्र जी का जन्म रीवा जिले के निकट ग्राम बड़ी हर्दी (म. प्र.) में 02.10.1979 को हुआ। आपके पूज्य पिता वैकुण्ठवासी पं. श्रीरविशंकर जी पाण्डेय एवं माता श्रीमती कुन्ती देवी पाण्डेय एक निष्ठावान् भगवत् प्रेमी हैं।

आपने प्रारम्भिक शिक्षा अपने ही जन्म स्थान में ग्रहण की। 1993 में आपनें महर्षि वेद विज्ञान विश्व विद्या पीठ जबलपुर (म.प्र.) में प्रवेश लेकर शुक्लयजुर्वेद, कर्मकाण्ड एवं ज्योतिषशास्त्र का गहन अध्ययन किया, और 1998 से आपने श्रीधाम-वृन्दावन में स्थाई रूप से निवास कर सात वर्षों तक श्रीमद्भागवत् महापुराण का भावमय अध्ययन कर आपनें उपनिषदों, श्रीरामचरितमानस, श्रीमद्देवीभागवत्, श्रीबाल्मीकिरामायण के साथ-साथ अन्य पुराणों में एवं संगीत में भी प्रवेश लिया। आचार्य श्री ने आचार्य की परीक्षा सम्पूर्णानन्द विश्व विद्यालय से उत्तीर्ण की, आपके पिता आपको योग्य एवं निपुण वक्ता एवं धर्म प्रचारक के रूप में देखना चाहते थे। अत: आपने अथक परिश्रम करके, एवं जगदम्बा की कृपा से व श्रीराधाकृष्ण की महती अनुकम्पा से अट्ठारह वर्ष की आयु से ही श्रीमद्भागवत् का भावमय एवं रसमय प्रवचन एवं अध्ययन साथ-साथ करते आ रहे हैं। आपकी लेखन कार्य में रुचि प्रारम्भ काल से रही है, आपने बाल्यावस्था में ही सम्पूर्ण भारत के अनेक तीर्थों की यात्रा एवं साधना की।

आपने 08.02.2002 में 'अखिल भारतीय त्रिपुरसुन्दरी शक्ति समिति' की स्थापना की। इस समिति के माध्यम से समस्त प्राणियों को आध्यात्म ज्ञान और संस्कृति परम्परा स्थाई रूप से चलती रहे, एवं जन-जन में भगवत् प्रचार-प्रसार की वृद्धि हो। यह संकल्प लिया आपकी मान्यता है कि मानव सेवा माधव तक पहुँचाती है। इस संकल्प से ऐसा विश्वास है कि हमारी ऋषि परम्परा, एवं संस्कृति का उत्थान होगा। आपकी शास्त्र सम्मत मान्यता है कि भागवत् एवं सभी सनातन ग्रन्थ भगवत् स्वरूप हैं सभी मनुष्यों को समस्त ग्रन्थों का पठन-पाठन कर ऋषि परम्परा का निर्वाह करना चाहिये। इसी धारणा से आचार्य श्री ने **भजनमाधुरी** का लेखन कार्य एवं प्रकाशन की जिम्मेदारी लेकर प्रथम श्रीजानकी मैया के चरणों में एवं श्रीगुरुदेव के चरणों मे पश्चात् समस्त भक्त समाज को समर्पित कर रहे हैं। आप साथ में गरीब ब्राह्मण बालकों को नि:शुल्क शिक्षा प्रदान करते आ रहे हैं। आपके ऊपर आदि शक्ति जगत् माता श्री त्रिपुरसुन्दरी का आशीर्वाद प्रारम्भ से ही प्राप्त रहा है, यही कारण है कि गुरुदेव भगवान् की कृपा से इतनी कम अवस्था में अनुपम उपलब्धियाँ प्राप्त हुईं। हमारी सभी भक्तों की ओर से एवं अपनी ओर से प्रभु परमेश्वर से प्रर्थना करते हैं की आपको ऐसी शक्ति प्रदान करे एवं शतायु प्रदान करें, ताकि समय-समय पर भक्तों को लाभ मिलता रहे।

अनुक्रमः

मंगला चरणम्	01
पद	03
रामायण(तुलसी कृत)संक्षिप्त	09
आरती श्री गणेश जी	15
तुमतो गजानन बड़े दयालु	16
सरस्वती जी की आरती	17
आरती श्री हनुमान जी	18
आरती शिव जी	19
आरती तुलसी जी	20
आरती वाल कृष्ण की	21
श्यामा तेरी आरती	22
भागवत भगवान की है आरती	23
आरती सत्यनारायण जी	24
आरती श्रीपारब्रह्म	25
आरती श्रीबाँके बिहारी जी की	26
आरती श्रीमद्भागवत जी की	27
आरती श्री राम जी की	28
आरती श्री त्रिपुरसुन्दरी की	29
गोपी गीत	30
मधुराष्टकम्	34
एक तुम्हीं आधार ओ सतगुरु	35
राम भजूँ पर गुरू न बिसारूँ	36
पधारो नाथ कीर्तन में	36
सन्तन के संग	37
श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे	38
बाँके बिहारी रे दूर करो दुख मेंरा	39
श्याम तेरे मिलने का	40
इक कोर कृपा की कर दो	41
गोविन्द कथा सुनाने वाले	42
गुरुदेव तुम्हारी जय होवे	43
राम नाम के हीरे मोती	43
राम नाम मस्तानी मै तो नाचूँगी	44-ए
कुछ पाने के खातिर तेरे दर	44-बी
हरदेश में तू	44-सी
कन्हैया तुम्हे इक नजर देखना है	45
बहुत दिन से तारीफ सुनकर तुम्हारी	46
नटवर नागरनन्दा भजो रे मन गोविन्दा	46
बड़ी देर भई	47
यमुना किनारे मेरो गाँव	48
सोच ले ओ समझले प्राणी	49
क्या भरोसा है इस जिन्दगी का	50
आज हरि आए विदुर घर पावणा	51
दाता तेरा मेरा प्यार	52
ना मैं मीरा ना मै राधा	53
नीको लगे री वृन्दावन	54
मेरा गोपाल गिरधारी जमाने से निराला है	55
मै तो जपूं सदा तेरा नाम	56
मेरा गोविन्द है अनमोल	57
हे बाँके बिहारी गिरिधारी हा	58
राम जी की चिड़िया	59
राम तुम बड़े दयालू हो	59
मुख मागा फल सब को देती	60
शंकर तेरी जटाओं में	61
मेरा आपकी कृपा से	62
दशा मुझ दीन की भगवन्	63
करो बन्दगी और भजन धीरे-धीर	64

मेरे शिर पर हाँथ रखदो राधा रानी 65
कृपा की न होती 66
मेरा दिल तुझपे कुर्वा 67
मोहिनी रूप बनायो 68
कौन पावे याको पार 69
दिगम्बर हो तो ऐसा हो 70
हे गोविन्द हे गोपाल 71
श्रीवृन्दावन धाम अपार 72
सीता राम दरश रस वरसे 73
जनम लियो चारो 74
आज अयोध्या की गलियों में 74
तेरी मर्जी का मैं हूँ गुलाम 75
राम का नाम लेकर 75
जब जब होय धरम की हानी 76
भए प्रगट कृपाला 77
श्रीराम चन्द्र कृपालु 79
ओ जाने वाले रघुवर से 80
आज मिथिला नगरिया 81
श्रीराम जी हमारे 82
दरबार में राधारानी के दुख दर्द मिटाये जाते हैं 83
मेरे मालिक के दरवार में 84
प्रेम से जिसनें न देखी 85
दूर नगरी बड़ी दूर नगरी 86
जहाँ विराजे राधा रानी 87
कृष्ण जिनका नाम है 88
स्वागतं कृष्णा सुस्वागतं कृष्णा 89
भये प्रगट कृपाला दीन दयाला 90
नन्द जी के आँगन में 91
जियो श्याम लाला 91
पूत सपूत जन्यौ यशुदा 92
आज बर्फी सी वृजनारि बनी 93
नन्द घर आनन्द भयो जै कन्हैया लाल की 94
यशोदा जायो ललना मैं यमुना पे सुनि आई 95
कन्हैया झूले पलना नेक धीरे झोंटा दीजो 96
नन्द लाला प्रगट भये 97
व्रज मे है रही जय जय कार 98
सुन ले दातिये मेरी बात फँसी है 99
इक जोगी आयो री तेरे द्वार 100
दुनिया काहे को बनाये राम ने 101
जुग जुग जीवे री यशोदा 102
नाम करण 103
मै सुनि मथुरा से जो आयो 103
छगन मगन मेरे लाल को आजा रे निन्दिया आजा 104
सोजा लाला सोजा 105
नाचे नन्द लाल नचावे हरि की मैया 106
तेरे लाला ने माटी खाई 107
श्याम माखन चुराते चुराते 108
माखन की चोरी नन्द लाल करे 109
मोहन से दिल क्यों लगाया है 110
मै तो गोवर्धन को जाऊँ मेरी वीर 111
छटा तेरी तीन लोक से न्यारी है 112
श्रीगोवर्धन महराज तेरे माथे 113
खुरचन है खीर मोहन 113
नन्द जी के लाल सखी 114
हमारो कान्हा गोवर्धन गिरिधारी 115
क्या रूठ गये मोहन हम तुमको मना लेंगे 116
मेरा छोटा सा संसार हरि 117
सुन बरसाने वाली 118
भाग्यवान है कृष्णा 119

सारे जहाँ के मालिक 120
हो गए भव से पार लेकर नाम तेरा 121
ये तो प्रेम की बात है ऊधौ 122
ऊधौ मन न भये दस बीस 123
मिलादो श्याम से ऊधौ 123
मोहि आन मिलो घनश्याम 124
कन्हैया कन्हैया पुकारा करंगे 125
मेरे उठे बिरह की पीर 126
सपनों में आने वाले सामने तो आजा 127
मैं तो गोविन्द के गुण गाना 128
वृज के नन्द लाला राधा जी के सांवरिया 129
अपनी वाणीं में अमृत घोल 130
हमरो प्रणाम प्रणाम बाँके बिहारी को 131
जरा मुरली की तान 131
मीरा दीवानी हो गई 132
एक दिन वो भोला भण्डारी 133
मुरली बजा के मोहना 134
ऐसो राश रच्यो वृन्दावन 135
जरी की पगड़ी बांधे 136
मुझे लगी श्याम संग प्रीत 137
एहि मुरारे कुञ्जविहारे 138
मैने मेहदी लगाई रे 139
आओ मेरी सखियो मुझे मेंहदी लगादो 140
कुछ न बिगड़ेगा तुम्हारा गुरु शरण जाने के बाद 141
पार करेंगे नैया भज कृष्ण कन्हैया 142
मांगा है मैने श्याम से 143
सुदामा मन्दिर देख डरे 144
न स्वर है न सरगम है 145
मीठे रस से भर्यो री राधारानी लागे 146
जीवन है तेरे हवाले ओ मुरली वाले 147
हरि भजन बिना विश्राम नहीं 148
भाव का भूखा हूँ भाव ही इक सार है 149
इदं अहं का भेद कोइ कौई जाने रे 150
कोई कहे गोविन्द 151
राधे तेरे चरणों की गर धूल जो मिल जाए 152
मन उस दिन की सोच 153
मोटे-मोटे नैनन के तू 154
अब सौंप दिया इस जीवन का 155
पुकारूँ जब तक है प्राण मेरा 156
रघुकुल की शक्ति 157
सीताराम सीताराम सीताराम कहिए 158
गीता ज्ञान..... 159
तुम्हें कृष्ण कहूँ या राम कहूँ 161
आना सुन्दर श्याम 163
एक झोली में फूल भरे हैं 164
बंगला अजब बना दरवेश 165
करमाँ की रेखा टारी रे नाहिं टरै 166
धन धन भोलेनाथ 167
लेके गौरा जी को साथ 168
भरोसा है मुझे तेरा 169
कभी राम बनके कभी श्याम बनके 170
बनवारी रे जीने का सहारा तेरा नाम रे 171
मधुर मुरली की तानों से 172
श्री राधे गोविन्दा मन भज ले 173
तेरी पतली कमरिया में श्याम 174
ईश्वर से करते जाना प्यार 174
मुझे कौन पूँछता था तेरी बन्दगी से पहले 175
मेरा कोई न सहारा बिन तेरे 176
बजरंग बली के नाम 177
जय जय राधा रमण हरि बोल 178
कीर्तन धुनें 179

।। मङ्गला चरणम् ।।

।।श्रीसरस्वत्यै नमः ।। श्रीगणेशाय नमः।। श्रीगुरुभ्यो नमः।।

ॐ वक्र तुण्ड महाकाय कोटि सूर्य समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।
ॐ सर्व रुप मयी देवी सर्वं देवी मयं जगत्।
अतोऽहं विश्व रुपां तां नमामि परमेश्वरीम्।।
ध्येयं सदा परि भवघ्न मभीष्ट दोऽहं
तीर्थास्पदं शिव विरिंचिनुतं शरण्यम्।
भृत्यार्तिऽहं प्रणत पाल भवाब्धि पोतं
वन्दे महापुरुषते चरणारविन्दम्।।
कृष्ण त्वदीय पद पंकज पंजरान्ते
अद्यैव मे विशतु मानस राज हंसः।
प्राण प्रयाण समये कफ-वात-पित्तैः
कण्ठावरोधनविधौ स्मरणं कुतस्ते।।
यं शैवाःसमुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो
बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्तेति नैयायिकाः।
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताःकर्मेति मीमांसकाः
सोऽयं वो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथोहरिः।
उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेश हारिणीम् ।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं राम वल्लभाम् ।।
श्रीरामचन्द्र रघुपुन्नव राजवर्य
राजेन्द्रराम रघनायक राघवेश।
राजाधिराज रघुनन्दन रामचन्द्र
दासोऽहमद्य भवतः शरणागतोऽस्मि।।

करूँ मैं दुश्मनी किससे अगर दुश्मन भी हो अपना।
मुहब्बत ने नहीं दिल में जगह छोड़ी अदावत की।।
लाली मेरे लाल की की, जित देखूँ तित लाल।
लाली देखन मैं गयी, मैं भी हो गयी लाल।।
प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा परजा जेहि रुचै, सीस देय लै जाय।।
फिर उनकी साधना सफल भी हो, तो कैसे ?
फिर उनकी बन्दगी कबूल भी हो, तो कैसे ?
काली बोलो कृष्ण बोलो, किछूतेइ क्षति नांई।
चित्त परिष्कार रेखे एक मने डाका चाई।।
आता है वज्द मुझको, हर दीनकी अदापर।
मसजिद में नाचता हूँ, नाकूसकी सदापर।।
ॐ तत् सत् श्री नारायण तू, पुरुषोत्तम गुरु तू।
सिद्ध बुद्ध तू, स्कन्द विनायक, सविता पावक तू।।
ब्रह्म मज्द तू, यह्व शक्ति तू, ईशु पिता प्रभु तू।
रुद्र विष्णु तू, राम कृष्ण तू, रहीम ताओ तू।।
वासुदेव गो-विश्वरूप तू, चिदानन्द हरि तू।
अद्वितीय तू, अकाल निर्भय, आत्मलिंग शिव तू।।

पद

卐

जित देखो तित श्याम मयी है,
श्याम कुंजन बन यमुना स्यामा
श्याम गगन घन घटा छई है,
सब रंगन में श्याम भरो है,
लोग कहत यह बात नयी है॥
न कुछ हम हंस के सीखे हैं,
न कुछ हम रोके सीखे हैं ।
जो कुछ थोड़ा सा सीखे हैं,
किसी के होके सीखे हैं ॥
आई ''अजल'' तो आप अकले चले गये।
सब कुछ था जमा घर मे मगर कुछ न ले गये ॥
हमजाने ये खाएंगे बहुत जिमीं बहु माल ।
ज्यों का त्यों ही रह गया पकड़ ले गया काल ॥
आस पास जोधाा खड़े सबै बजावै ताल ।
मांझ महल से ले गया ऐसा काल कराल ॥
सब जग ईश्वर रूप है भलो बुरो नहिं कोय ।
जैसी जाकी भावना तैसो ही फल होय ॥
नजरें बदली तो नजारे बदल गये।
किस्ती ने बदला रुख तो किनारे बदल गये॥
बाधाएँ कब बाँध सकी है आँगे बड़ने वाले को।
विपदाएँ कब रोकसकी है पथपर चलने वालों को॥
जो खुदी को जलाता है वह खुदा को पाता है।
जो खुद को जलाता है वह मित्र को पाता है॥
मित्रता कोई सहज खेल नहीं दो दिलों का मेल है।
भाव के बाजार में रोकड़े को मोल नहीं बिकता अनमोल है।।
प्रारब्ध पहले रचा पीछे रचा शरीर।
तुलसी चिन्ता क्यों करे भजले श्री रघुवीर॥
लखी जिन लाल की मुस्क्यान
तिनहिं बिसरी बेद बिधि सब योग संयम ज्ञान।
नेम व्रत आचार पूजा पाठ गीता ज्ञान (भीष्मपितामह)
मन की गति है अटपटी झटपट लखै न कोय।
जब मन की खटपट मिटै तो चटपट दर्शन होय॥
मन के हारे हार है मन के जीते जीत।
मनहिं मिलावत राम से मनही करत फजीत॥
सजन सबेरे जाएँगे नैन भरेंगे रोय।
बिधिना ऐसी रैन कर भोर कबहुँ न होय॥

卐

क्षण भंगुर जीवन की कलिका
कल प्रात को जान खिली न खिली।

मलयाचल की सुचि शीतल मंद
सुगन्ध समीर मिली न मिली ।।
कलि काल कुठार लिए फिरता
तन नम्र पे चोट झिली न झिली ।
कहले हरिनाम अरी रसना फिर
अन्त समय मे हिली न हिली ।।
मुख सूख गया यदि रोते हुए
फिर अमृत ही बरसाया तो क्या ।
जब भव सागर में डूब चुके
तव नाविक नाव को लाया तो क्या।।
जब लोचन बंद हमारे हुए
तब निष्ठुर तू मुस्काया तो क्या ।
जब जीवन ही न रहा जग में
तब आकर दरस दिखया तो क्या ।।
हरे कृष्ण ही कृष्ण पुकारूँ सदा
मुख आसुओं से नित धोता रहूं ।
वृजराज तुम्हारे वियोगन में
मैं बस यूं ही निरन्तर रोता रहूं ।।
शाम भई पर श्याम नहीं आये
श्याम बिना क्यों शाम सुहाए ।

व्याकुल मन हर श्याम से पूंछे
शाम बता क्यो श्याम न आए।।
शाम ने श्याम का राज बताया
शाम नें क्या कर श्याम को पाया ।
शाम ने श्याम के रंग में रंग कर
अपने आप को श्याम बनाया ।।
जो उस सांवले को ढूढ़ता है
उसे इक दिन सांवला ढूढ़ता है ।
जिसे ढूढ़ने का अमल पड़ चुका है,
वो इस ढूढ़ने मजा ढूढ़ता है ।।
अरे मन जिसे तू यहां ढूढ़ता है
वो मुझमें है तू कहां ढूढ़ता है ।
मिला उसको जो दिलमिला ढूढ़ता है
जुदा उससे है जो जुदा ढूढ़ता है ।।
वह पायेगा क्या रस का चसका
नहिं कृष्ण से प्रीति लगायेगा जो ।
हरे कृष्ण उसे समझेगा वही
रसिकों के समाज मे जायेगा जो ।।
व्रज धूरि लपेट कलेवर मे
गुण नित्य किशोर के गायेगा जो ।

हंसता हुआ श्याम मिलेगा उसे
निज प्राणों की बाजी लगाएगा जो॥
मन में बसी बस चाह यही
प्रियनाम तुम्हारा चारा करूँ ।
बिठके तुम्हे मन मन्दिर में
मन मोहिनी रूप निहारा करूँ॥

卐

राम भारती

सत गुरु मेरे सूरमा धर के मारा तीर ।
बाहर घाव दीखै नही भीतर बिंधया शरीर ।।
सत गुरु मेरा बानिया करै बणिज व्यवहार ।
बिना तराजू बाट के तोले जग संसार ।।
पहले किसको ध्याऊँ मैं किसको दूँ सम्मान ।
प्रथम मात दूजे पिता तीजे गुरु महान्।।
अलख पुरुष निज नाम चतुर्थ लखै कोई बिरला पीर।
भेद बतावे उस घर का मन में धर के धीर ।।
भेदी होतो कुछ भी नही बड़ी नहीं कोई बात ।
वारी जाऊँ गरुचरण जो कहें तत्व रहस्य की बात ।।
तत्त्व ज्ञान का जानन हारा सार शब्द भी जानें ।
ऐसा सूरमा मिले गरु तो राम भारती माने ।।
मुकुट बनाकर रखूँ राशीश पर सत्यसपथ भगवान की
ऐसा गुरु पूरा मिले तो बाजी लगादूँ जान की ।।
राम भारती बिनती करे मुझको शरण में लीजिये ।
खा रहा गोते हूँ मैं बेड़ा पार भव से कीजिये ।।

यदिराशीसमे कामान वरस्त्वां वरदर्षभ ।
कामानां हृद्यसंदोह भवतस्तु वरं वृणे ॥

रहिमन वो नर मर चुके जो कहुँ मागन जाय ।
उनसे पहले वो मरे जिन मुख सों निकसत नाय ।।

चार वेद षट् शास्त्र में, बात मिली हैं दोय।
दु:ख दीने दु:ख होत है, सुख दीने सुख होय।।
बहता पानी निरमला बन्दा गन्दा होय।
साधु जन रमता भला, दाग न लागै कोय।।
बंधा पानी निरामला जो टुक गहरा होय।
साधू जन बैठा भला जो कुछ साधन होय।।
जिन घर नौबत बाजती, होत छत्तीसों राग।
सो घर भी खाली पड़े, बैठन लागे काग।।
दो बातन को भूल मत, जो चाहे कल्याण।
नारायण एक मौत को, दूजे श्री भगवान।।

अविवेकी हेतु शास्त्रों का अध्ययन भाररूप है।
रागी के लिये तत्त्वज्ञान भाररूप है।
अशान्त के लिये मन भार है।
आत्मज्ञान से शून्य हेतु शरीर भार है।

रामायण

जे एहि कथहिं सनेह समेता। पढ़िहहिं सुनिहहिं समुझिसचेता।
हुइहहिं रामचरण अनुरागी। कलिमल रहित सुमंगल भागी।
सब कर परम प्रकासक जोई। राम अनादि अवधिपति सोई।।
जगत प्रकास्य प्रकासक रामू। मायाधीस ग्यान गुन धामू।।
जासु सत्यता में जड़ माया। भास सत्य इव मोह सहाया।।
रजत सीप मँहु भास जिमि, जथा भानुकर बारि।
जदपि मृशा तिहुँ काल सोइ, भ्रम न सकइ कोउ टारि।।
एहि बिधि जग हरि आश्रित रहई।जदपि असत्य देत दुख अहई।।
जौं सपनें सिर काटै कोई। बिनु जागें न दूरि दुख होई।।
जासु कृपां अस भ्रम मिटि जाई। गिरिजा सोई कृपाल रघुराई।।
अगुन अरूप अलख अज जोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई।।
जो गुन रहिन सगुन सोइ कैसें।जलु हिम उपल बिलग नहिं जैसे।।
जब जब होई धरम कै हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी।।
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी। सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी।
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।।

असुर मारि थापहिं सुरन्ह, राखहिं निज श्रुति सेतु।
जन विस्तारहिं विसद जस, राम जन्म कर हेतु।।

सुनहु सखा कह कृपा निधाना। जेहि जय होइ सो स्यंदन आना।।
सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका।।
बल बिवेक दम परहित घोरे। छमा कृपा समता रजु तोरे।।
ईस भजनु सारथी सुजाना। बिरति चर्म संतोष कृपाना।।
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा। बर बिग्यान कठिन कोदण्डा।।
अमल अचल मन त्रोन समाना।सम जम नियम सिलीमुख नाना।।
कवच अभेद बिप्र गुरु पूजा। एहि सम विजय उपाय न दूजा।।
सखा धर्ममय अस रथ जाकें। जीता कहँ न कतहु रिपु ताकें।।

महा अजय संसार रिपु, जीति सकइ सो बीर।
जाकें अस रथ होइ दृढ़, सुनहु सखा मति धीर।।

बालमीकि हसि कहहिं बहोरी। बानी मधुर अमिय रस बोरी।
सुनहु राम अब कहउँ निकेता। जहां बसहु सिय लखन समेता।।
जिन्हके श्रवन समुद्र समाना। कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना।।
भरहिं निरन्तर होहिं न पूरे। तिन्हके हिय तुम्ह कहुँ गृह रूरे।।
लोचन चातक जिन्ह करि राखे। रहहिं दरस जलधर अभिलाषे।।
निदरहिं सरित सिंधु सर भारी। रूप बिन्दु जल होहिं सुखारी।।

तिन्हकें हृदय सदन सुखदायक।
बसहु बन्धु सिय सह रघुनायक।।
जसु तुम्हार मानस बिमल, हंसिनि जीहा, जासु।
मुकताहल गुन गन चुनइ, राम बसहुँ हियँ तासु।।

प्रभुप्रसाद सुचि सुभग सुबासा। सादर जासु लहइ नित नासा।।
तुम्हहिं निवेदित भोजन करहीं। प्रभु प्रसाद पट भूषन धरहीं।।
सीस नवहिं सुर गुरु द्विज देखी।प्रीति सहित करि बिनय बिसेषी।।
कर नित करहिं राम पद पूजा। राम भरोस हृदय नहिं दूजा।।
चरन राम तीरथ चलि जाहीं। राम बसहु तिन्हके मन माहीं।।
मंत्रराजु नित जपहिं तुम्हारा। पूजहिं तुम्हहिं सहित परिवारा।।
तरपन होम करहिं बिधि नाना। विप्र जेवाँइ देहिं बहु दाना।।

तुम्ह तें अधिक गुरहि जियँ जानी।।
सकल भायँ सेवहिं सनमानी।।
सबुकरि माँगहि एक फलु, राम चरन रति होउ।

तिन्ह के मन मंदिर बसहु, सिय रघुनन्दन दोउ।।
काम क्रोध मद मान न मोहा। लोभ न छोभ न राग न द्रोहा।।
जिन्ह कें कपट दंभ नहिं माया। तिन्ह कें हृदय बसहु रघुराया।।
सब के प्रिय सब के हितकारी। दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी।
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी। जागत सोवत सरन तुम्हारी।।
तुम्हहिं छांड़ि गति दूसरि नाहीं। राम बसहु तिन्ह कें मनमाहीं।।
जननी सम जानहिं परनारी। धनु पराव विष तें विष भारी।।
जे हरषहिं पर सम्पति देखी। दुखित होहीं पर बिपति बिसेषी।।
जिन्हहिं राम तुम्ह प्रान पिआरे। तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे।।
स्वामि सखा पितु मातु गुर, जिन्ह के सब तुम्ह तात।
मन मंदिर तिन्ह कें बसहु, सीय सहित दोउ भ्रात।।
अवगुन तजि सब के गुन गहहीं। बिप्र धेनु हित संकट सहहीं।।
नीति निपुन जिन्ह कइ जग लीका।
घर तुम्हार तिन्हकरमनु नीका।।
गुन तुम्हार समुझइ निज दोसा। जेहि सब भांति तुम्हार भरोसा।।
राम भगत प्रिय लागहिं जेही। तेहि उर बसहु सहित बैदेही।।
जाति पांति धनु धरमु बड़ाई। प्रिय परिवार सदन सुखदाई।।
सब तजि तुम्हहिं रहइ उर लाई। तेहि के हृदयँ रहउ रघुराई।।
सरगु नरकु अपवरगु समाना। जहँ जहँ देख जरें धनु बाना।।
करम बचन मन राउर चेरा। राम करहु तेहि कें उर डेरा।।
जाहि न चाहिअ कबहुँ कछु, तुम्ह सन सहज सनेहु।
बसहु निरन्तर तासु मन, सो राउर निज गेहु।।
परम धर्म श्रुति बिदित अहिंसा। पर निंदा सम अघ न गिरीसा।।
परहित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।
परहित बस जिनके मनमाँहीं। तिन कँह जग दुर्लभ कछु नाहीं।।
अघ कि रिपुनता सम कछु आना। धर्म कि दया सरिस हरिजाना।।
संत बिटप सरिता गिरि धरनी। पर हित हेतु सबन्हि कै करनी।।
कबहुँ कि दुख सबकर हित ताकें।
तेहि कि दरिद्र परसमनि जाके।
तन तिय तनय धामु धनु धरनी। सत्य संघ कहुँ तृन सम बरनी।।
नहिं असत्य सम पातक पुंजा। गिरि सम होहिं कि कोटिक गुंजा।।
सत्य मूल सब सुकृत सुहाये। वेद पुरान बिदित मनु गाये।।
धरमु न दूसर सत्य समाना। आगम निगम पुरान बखाना।।
साधु चरित सुभ चरित कपासू। निरस बिसद गुनमय फल जासू।।
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा। बंदनीय जेहि जग जस पावा।।
संत असंतन्हि कै असि करनी। जिमि कुठार चन्दन आचरनी।।
काटइ परसु मलय सुनु भाई। निज गुन देइ सुगंध बसाई।।
ताते सुर सीसन्ह चढ़त, जग बल्लभ श्रीखंड।
अनल दाहि पीटत घनहि, परसु बदन यह दंड।।
बिषय अलंपट सील गुनाकर। पर दुख दुख सुख सुख देखें पर।।
सम अभूत रिपु बिमद बिरागी। लोभामरष हरष भय त्यागी।।
कोमल चित्त दीनन्ह पर दाया। मन बच क्रम मम भगति अमाया।।
सबहिं मानप्रद आपु अमानी। भरत प्रान सम मम ते प्रानी।।
बिगत काम मम नाम परायन। सांति बिरति विनती मुदितायन।।
सीतलता सरलता मयत्री। द्विज पद प्रीति धर्म जनयत्री।।
ए सब लच्छन बसहिं जासु उर। जानेहु तात सन्त संतत फुर।।
सम दम नियम नीति नहिं डोलहि।परुष बचन कबहूँनहिं बोलहिं।
निन्दा अस्तुति उभय सम, समता मम पद कंज।

ते सज्जन मम प्रान प्रिय, गुनमंदिर सुख पुंज।।
पर उपकार बचन मन काया। संत सहज सुभाउ खगराया।।
संत सहहिं सुख परहित लागी। पर दुख हेतु असंत अभागी।।
भूर्ज तरु सम संत कृपाला। परहित निति सह बिपति बिसाला।।
संत हृदय नवनीत समाना। कहा कविन्ह परि कहै न जाना।।
निज परिताप द्रवइ नवनीता। पर दुख द्रवहिं संत सुपुनीता।।
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा।।
गुरु पद पंकज सेवा, तीसरि भगति अमान।
चौथी भगति मम गुन गन, करइ कपट तजि गान।।
मोह न अंध कीन्ह केहि केही। को जग काम नचाव न जेही।।
तृना केहि न कीन्ह बौराहा। केहिकर हृदय क्रोध नहिं दाहा।।
ग्यानी तापस सूर कवि, कोबिद गुन आगार।
केही कै लोभ बिडम्बना, कीन्हि न एहिं संसार।।
श्रीमद बक्र न कीन्ह केहि, प्रभुता बधिर न काहि।
मृगलोचनी के नैन सर, को अस लागु न जाही।।
जोग बियोग भोग भल मंदा। हित अनहित मध्यम भ्रम फंदा।।
जनमु मरनु जहँ लगि जगजालू। संपत्ति बिपति करमु अरु कालू।।
धरनि धामु धनु पर परिवारू। सरगु नरकु जहँ लगि ब्यवहारू।।
देखिअ सुनिअ गुनिअ मनमांहीं। मोह मूल परमारथु नाहीं।।
सपनें होइ भिखारि नृपु, रंक नरकपति होइ।
जागें लाभु न हानि कछु, तिमि प्रपंच जियँ जोई।।
मोहनिशा सबु सोवनिहारा। देखिअ सपन अनेक प्रकारा।।
एहिं जग जामिनि जागहिं जोगी। परमारथी प्रपंच बियोगी।।
जानिअ तबहिं जीव जग जागा। जब सब विषय बिलास बिरागा।।
होइ विवेकु मोह भ्रम भागा। तब रघुनाथ चरन अनुरागा।।
प्रभु तरु तर कपि डार पर, ते किए आपु समान।
तुलसी कहूँ न राम से, साहिब सीलनिधान।।
सकल विघ्न व्यापहिं तहिं तेही। राम सुकृपाँ बिलोकहिं जेही।।
कोमल चित अति दीनदयाला। कारन बिनु रघुनाथ कृपाला।।
सुनु मुनि मोहि कहउँ सहरोसा।भजहिं जे मोहि तजिसकल भरोसा।
करउँ सदा तिन्ह कै रखवारी। जिमि बालक राखइ महतारी।।
रामकृपा बिनु सुनु खगराई। जानि न जाइ राम प्रभुताई।।
जानें बिनु न होइ परतीती। बिनु परतीति होइ नहिं प्रीति।।
प्रीति बिना नहिं भगति दृढ़ाई। जिमि खगपति जल कै चिकनाई।।
बिनु संतोष न काम नसाहीं। काम अछत सुख सपनेहुँ नाहीं।।
राम भजन बिनु मिटहिं कि कामा।थलबिहीन तरुकबहुँ कि जाम।
बिनु बिस्वास भगति नहिं, तेहि बिनु द्रवहिं न रामु।
राम कृपा बिनु सपनेहुँ, जीव न लेहु बिश्रामु।।
बंदउँ नाम राम रघुबर को। हेतु कृसानु भानु हिमकर को।।
सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू। लोक लाहु परलोक निबाहू।।
राम नाम मनिदीप धरु, जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहेरहुँ, जौ चाहसि उजियार।।
जड़ चेतन जगजीव जग, सकल राममय जानि।
बंदउँ सब के पद कमल, सदा जोरि जुग पानि।।
सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।

आरती श्री गणेश जी

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा
माता जाकि पार्वती पिता महादेवा
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा

एकदन्त दयावन्त चार भुजा धारी
माथे सिन्दूर सोहे मूस की सवारी
जय गणेश जय गणेश.....

अन्धन को आँख देत कोढ़िन को काया
बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया
जय गणेश जय गणेश.....

हार चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा
मोदक को भोज लगे सन्त करें सेवा
जय गणेश जय गणेश.....

दीनन की लाज राखो शम्भु सुत वारी
कामना को पूरी करो जायें बलिहारी
जय गणेश जय गणेश.....

गणपति वन्दना

तुमतो गजानन बड़े दयालु सुनलो मेरी अरजिया।
लाज बचाओ न पार लगाओ न आया हूँ मैं तेरे द्वार।।
हाथी मस्तक सर पे सोहे चन्दन है उँजियारे।
मैया तुम्हरी पार्वती हैं पिता हैं डमरू वाले।।
एक दन्त गजवदन विनायक मूष है तुम्हरी सवारी।
ऋद्धि सिद्धि दोऊ चँवर डुलावे विद्या के भण्डारी।।
अँधन को तुम आँख देत कोढ़िन को देते काया।
बाँझन को तुम पुत्र देत निर्धको देते माया।।

सरस्वती जी की आरती

ॐ जय सरस्वती माता मैया जय सारद माता।
तुम्हारा ध्यान धरे जो गुण विद्या पाता ।। टेक।।
ब्रह्मा विष्णु महेश मनावे नारद ऋषि गाता ।
बिना कृपा के तुम्हारे ज्ञान नही आता ।। टेक।।
छह और चार अठारह पार नहीं पाता ।
निश्चय मन से ध्यावे सुर मुनि जन लाता।।टेक।।
मै हूँ पुत्र तुम्हारा जग जननी माता ।
करो कृपा अब मुझ पर चरणों सिर नाता।।टेक।।
निसदिन मैया जी कि आरति जो कोई नर गाता।
सकल मनोरथ उसका पूरन हो जाता ।।टेक।।
धूप दीप नैवेद्य चढ़ा कर भोग तेरा लाता।
मन इच्छा फल पावे कर्म सुधर जाता ।।टेक।।

आरती श्री हनुमान जी

आरति कीजै हनुमान लला की ।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।
जाके बल से गिरिवर कांपे रोग दोष जाके निकट न झांके।।
अंजनि पुत्र महा बलदाई संतन के प्रभु सदा सहाई।
दे बीरा रघुनाथ पठाये लंका जारि सिया सुधि लाये।।
लंका सी कोट समुद्र सी खाई जात पवनसुत बार ना लाई।
लंका जारि असुर संहारे सियाराम जी के काज संवारे।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़ सकारे, लाय संजीवन प्राण उबारे।
पैठि पाताल तोरि यम तारे अहिरावण की भुजा उखारे।।
बायें भुजा असुरदल मारे दाहिने भुजा संतजन तारे।
सुर नर मुनिजन आरती उतारें जय जय जय हनुमान उचारें।।
कञ्चन थार कपूर लौ छाई आरति करत अँजनी माई।
जो हनुमान जी की आरती गावें बसि बैकुण्ठ परम पद पावें।।

आरती शिव जी

ॐ जय शिव ओंकारा स्वामी जय शिव ओंकारा
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा.....
एकानन चतुरानन पंचानन राजे
हंसासन गरूड़ासन वृषवाहन साजे ....

दोय भुजा चार चर्तुभुज दसभुज ते सोहे
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहे .....
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी
चन्दन मृगमद चन्दा भाले शुभकारी.....
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे.....
कर में दण्ड कमण्डल, चक्र त्रिशूल धर्ता
जग हर्ता जग भर्ता जग पलन कर्ता.....
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका
प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनों एका.....
काशी में विश्वनाथ विराजें नन्दो ब्रह्मचारी
नित उठ भोग लगावें महिमा अति भारी....

त्रिगुण शिवजी की आरती जो कोई नर गावे....
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे....
जय शिव ॐकारा स्वामी जय शिव ॐकारा

आरती तुलसी जी

तुलसी महारानी नमो नमः
हरि की पटरानी नमो नमः।

सालग की रानी नमो नमः
गंगे महारानी नमो नमः।।

जो कोई तुलसी सवेरे ही ध्यावै-2
श्री कृष्ण जी के दर्शन पावै
तुलसी महारानी नमो नमः

जो कोई तुलसी दोपहर को ध्यावै-2
खीर खांड के भोजन पावै
तुलसी महारानी नमो नमः

जो कोई तुलसी शाम को ध्यावै-2
मनवांछित वो फल पा जावै
तुलसी महारानी नमो नमः

जो तुलसी त्रिकाल को ध्यावै-2
मनचाही वो सिद्धि पावै
तुलसी महारानी नमो नमः

आरती वाल कृष्ण की

आरति वाल कृष्ण की कीजै
अपनो जनम सुफल कर लीजै

श्री यसुदा को परम दुलारो
बाबा की अंखियन को तारो
गोपिन के प्राणन सों प्यारो
इनपै प्राण न्योछावर कीजै ।। आरति ।।

बलदाऊ को छोटो भैया
कनुआ कहि कहि बोलत मैया
परम मुदित मन लेत वलैया
अपनो सरवस इनकूँ दीजै ।। आरति ।।

श्रीराधावर कुँवर कन्हैया
वृजजन को नवनीत चुरैया
यह छवि नयनन मे भर लीजै ।। आरति।।

तोतरि बोलनि मधुर सुहावै
सोई सुकृती जो इनकूँ ध्यावै
अब इनको अपनो कर लीजै ।। आरति।।

श्रीश्यामा श्याम की आरती

श्यामा तेरी आरती कन्हैया तेरी आरती
सारा संसार करेगा हाथ जोड़ के।।
सिर पर सोना मुकुट विराजे
गल वैजन्ती माला साजै।
और फूलन के हार, करेगा कर जोड़ के
।।श्यामा तेरी।।

ब्रह्मादिक तेरो यश गावें
नारद शारद ध्यान लगावें।
और करें जै जैकार, करेगा कर जोड़ के
।।श्यामा तेरी।।

मैं हूँ दीनन दुखिया भारी
आया हूँ प्रभु शरण तुम्हारी।
रखियो लाज हमार, करेगा कर जोड़ के
।।श्यामा तेरी।।

अपने चरण की भक्ति दीजै
अपनी शरण में मोहे रख लीजै
करो भव सागर पार, करेगा कर जोड़ के
।।श्यामा तेरी।।

प्रेम सहित जो आरति गावे
श्रीराधा माधव के पद पावे।
बाढ़े सुयश अपार, करेगा कर जोड़ के
।।श्यामा तेरी।।

श्रीभागवत भगवान की है आरती

श्रीभागवत भगवान की है आरती
पापियों को पाप से है तारती।
ये अमर ग्रन्थ ये मुक्ति पंथ ये
पंचम वेद निराला है।
नव ज्योति जगाने वाला है-।।
हरि नाम यही हरि ध्यान यही ,
जग के मंगल की है आरती
पापियों को पाप से है तारती।
श्रीभागवत भगवान की.....
ये शान्ति गीत पावन पुनीत ,
पापों को मिटाने वाला है।
हरि दरश कराने वाला है।
ये सुख करनी ये दु:ख हरणी
श्रीमधुसूदन की है आरती।
पापियों को पाप से है तारती।
श्रीभागवत भगवान की.....
ये मधुर बोल मग पंथ खोल ,
सन्मार्ग बताने वाला है।
बिगड़ी को बनाने बाला है।
श्रीराम यही घनश्याम यही ,
प्रभु की महिमा की है आरती ।
पापियों को पाप से है तारती।
श्रीभागवत भगवान की.....

आरती सत्यनारायण जी

ॐ जय लक्ष्मीरमणा स्वामी जय लक्ष्मीरमणा।
सत्यनारायण स्वामी जन-पातक-हरणा।।
रत्न जड़ित सिंहासन अद्भुत छवि राजै।
नारद करत निरंजन घंटा ध्वनि बाजै।।
प्रकट भये कलि कारण द्विज को दरस दिया।
बूढा ब्राह्मण बनकर कंचन महल किया।।
दुर्बल भील कठारो जिन पर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा जिनकी विपत हारी।।
वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीन्हीं।
सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर अस्तुति कीन्हीं।।
भाव भक्ति के कारण छिन-छिन रूप धरयो।
श्रद्धा धारण कीन्हीं तिनके काज सरयो।।
ग्वाल बाल संग राजा बन में भक्ति करी।
मन वांछित फल दीन्हों दीन दयाल हरी।।
चढ़त प्रसाद सवायो कदली फल मेवा।
धूप दीप तुलसी से राजी सत्य देवा।।
श्री सत्यनारायण जी की आरती जा कोई नर गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावै।।
जय लक्ष्मीरमणा स्वामी जय लक्ष्मीरमणा।
सत्यनारायण स्वामी जन-पातक-हरणा।।

आरती श्रीपारब्रह्म

ॐजय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करें।
जो ध्यावे फल पावे, दु:ख विनसे मन का
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ मैं जिसकी
तुम पूरण परमात्मा, तुम अर्न्तयामी
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी
तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्त्ता
मैं मूरख, खल, कामी, कृपा करो भर्ता
तुम हों एक अगोचर, सबके प्राण-पति
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति
दीन-बन्धु दु:ख हर्ता, ठाकुर तुम मेरे
अपने हाथ उठ़ाओ, द्वार पड़ा मैं तेरे
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तों की सेवा
तन मन धन, सब कुछ है तेरा
तेरा तुझको अर्पण, क्या लगता मेरा
पूर्णब्रह्म जी की आरती जो कोई नर गावे
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे।।

आरती श्री बाँके बिहारी जी की

बाँके बिहारी तेरी आरति गाऊँ।।
आरति गाऊँ प्रभु तेरा गुण गाऊँ।

मोर मुकुट तेरे शीष पे सोहे
प्यारी वंशी मुनि मन मोहे
देखि छवि बलिहारी जाऊँ ।। बाँके बिहारी।।

चरणों से निकली है गंगा प्यारी
जिसने सारी दुनिया तारी
उन चरणों मे शीष झुकाऊँ ।।बांके बिहरी।।

दास अनाथ के नाथ आप हो
सुख दुख जीवन प्यारे साथ आप हो
निस दिन तेरा ध्यान लगाऊँ ।।बांकेबिहरी।।

आरती श्रीमद्भागवत जी की

आरति अति पावन पुराण की
धर्म भक्ति विज्ञान खान की
महा पुराण भागवत निर्मल
सुक मुख विगलित निगम कल्पफल।
परमानन्द सुधारस मयकल
लीला रति रस रसनिधान की।। आरति ।।
कलिमल मथनि त्रिताप निवारिणि
जन्म मृत्यु मय भव भय हारिणि।
सेवत सतत सकल सुख कारिणि
सुमहौषधि हरि चरित गान की।। आरति ।।
विषय विलास विमोह विनाशिनि
विमल विराग विवेक विकाशिनि।
भगवत तत्त्व रहस्य प्रकाशिनि
परम ज्योति परमात्म ज्ञान की।। आरति ।।
परमहंस मुनि मन उल्लासिनि
रसिक हृदय रस रास विलासिनि।
भुक्ति मुक्ति रति प्रेम सुदासिनि
कथा अकिँचन प्रिय सुजान की।। आरति ।।

आरती श्री राम जी की

हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ
आरती उतारूँ प्रभु तन मन वारूँ।।
हे राजा राम ।।
कनक सिंहासन राजत जोरी
दसरथ नन्दन जनक किसोरी।
वाम भाग सोहित जग जननी
चरण विराजत हैं सुत अंजनी ।।
हे राजा राम ।।
छिन-छिन पल यह रूप निहारूँ
प्रभु पंकज नहिं नेक विसारूँ
सुन्दरता पर त्रिभुवन वारूँ ।।
हे राजा राम ।।
आरति हनुमत के मन भावै
राम कथा नित सुनने आवैं।
जो कोई आपकी आरति गावै
बसि बैकुण्ठ परम पद पावै ।।
हे राजा राम ।।

आरती श्री त्रिपुरसुन्दरी की

जगजननी जय! जय!! मा जग जननी जय! जय!!
भयहारिणि भव तारिणि भव भामिनि जय! जय!!
तू ही सत चित सुख मय शुद्ध ब्रह्मरूपा।
सत्य सनातन सुन्दर पर शिव सुरभूपा।।१।। माँ जग०।।
आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी।
अमल अनन्त अगोचर अज आँनन्दराशी।।२।। माँ जग०।।
अविकारी अघहारी अकल कला धारी।
कर्ता विधि भर्ता हरि हर संघार कारी।।३।। माँ जग०।।
तू विधि वधू रमा तू उमा महा माया।
मूल प्रकृति विद्या तू तू जननी जाया।।४।। माँ जग०।।
राम कृष्ण तू सीता व्रजरानी राधा।
तू वांछाकल्पद्रुम हारिणि सब बाधा।।५।। माँ जग०।।
दश विद्या नव दुर्गा नाना शस्त्रकरा।
अष्टमातृका योगिनि नव नव रूप धरा।।६।। माँ जग०।।
तू परधाम निवासिनि महा विलासिनि तू।
तू ही श्मशानविहारिणि ताण्डवलासिनि तू।।७।। माँ जग०।।
सुरमुनि मोहिनि सौम्या तू शोभाऽऽधारा।
विवशन विकट सरूपा प्रलयमयी धारा।।८।। माँ जग०।।
तू ही स्नेह सुधामयि तू अति गरल मना।
रत्न विभूषित तू ही तू ही अस्थि तना।।९।। माँ जग०।।
मूलाधार निवासिनि इह पर सिद्धि प्रदे।
कालातीता काली कमला तू वरदे।।१०।। माँ जग०।।
शक्ति शक्तिधर तू ही नित्य अभेदमयी।
भेद प्रदर्शिनि वाणी विमले वेदत्रयी।।११।। माँ जग०।।
हम अति दीन दुखी माँ! विपद् जाल घेरे।
हैं कपूत अति कपटी पर बालक तेरे।।१२।। माँ जग०।।
निज स्वभाववस जननी! दया दृष्टि कीजै।
करुणा कर करुणा मयि चरण शरण दीजै।।१३।। माँ जग०।।

ॐराजराजेश्वर्यै च विद्महे षोडशीविद्यायै च धीमहि तन्नो त्रिपुरसुन्दरी प्रचोदयात्।।

गोपीगीतम्

गोप्य ऊचुः

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः
श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि ।
दयित दृश्यतां दिक्षु तावका
त्वयिधृतासवस्त्वां विचिन्वते।।१।।

शरदुदाशये साधुजातसत्
सरशिजोदर श्रीमुषा दृशा।
सुरतनाथतेऽशुल्कदासिका
वरद निघ्नतो नेह किं वधः।।२।।

विषजलाप्ययाद् व्यालराक्षसाद्
वर्षमारुताद् वैद्युतानलात् ।
वृषमयात्मजाद् विश्वतोभया-
दृषभ ते वयं रक्षिता मुहुः ।।३।।

न खलु गोपिकानन्दनो भवा-
नखिल देहिनामन्तरात्मदृक् ।
विखनसार्थितो विश्वगुप्तये
सख उदेयिवान् सात्वतां कुले ।।४।।

विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ते
चरणमीयुषां संसृतेर्भयात् ।

करसरोरुहं कान्त कामदं
शिरसि धेहि नः श्रीकरग्रहम् ॥५॥
व्रजजनार्तिहन् वीर योषितां
निज जनस्मयध्वं सनस्मित।
भज सखे भवत्किङ्करीःस्म नो
जलरुहाननं चारु दर्शय॥६॥
प्रणतदेहिनां पापकर्शनं
तृणचरानुगं श्रीनिकेतनं।
फणिफणार्पितं ते पदाम्बुजं
कृणुकुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम् ॥७॥
मधुरया गिरा वल्गुवाक्यया
बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षण ॥
विधिकरीरिमा वीर मुह्यती
रधरसीधुनाऽऽप्याययस्व नः ॥८॥
तव कथामृतं तप्तजीवनं
कविभिरीडितं कल्मषापहम् ।
श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं
भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः॥९॥
प्रहसितं प्रिय प्रेमवीक्षणं
विहरणं च ते ध्यानमङ्गलम् ।
रहसि संविदो या हृदिस्पृशः
कुहक नो मनः क्षोभयन्ति हि ॥१०॥
चलसि यद् व्रजच्चारयन् पशून्
नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम् ।
शिलतृणाङ्कुरैःसीदतीति नः
कलिलतां मनःकान्त गच्छति ॥११॥
दिनपरिक्षये नीलकुन्तलै -
र्वनरुहाननं विभ्रदावृतम् ।
घनरजस्वलं दर्शयन् मुहु-
र्मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि ॥१२॥
प्रणतकामदं पद्मजार्चितं
धरणिमण्डनं ध्येयमापदि।
चरणपङ्कजं शन्तमं च ते
रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन्।१३॥
सुरतवर्धनं शोकनाशनं
स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम् ।
इतररागविस्मारणं नृणां
वितर वीर नस्तेधरामृतं ॥१४॥
अटति यद् भवानह्निकाननं
त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम्।
कुटिलकुन्तलं श्रीमुखं च ते
जड उदीक्षतां पक्ष्मकृद् दृशाम् ॥१५॥
पतिसुतान्वयभ्रातृबान्धवा
नतिविलंघ्य तेऽन्त्यच्युतागताः।

गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः
कितव योषितः कस्त्यजेन्निशि॥१६॥
रहसि संविदं हृच्छयोदयं
प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम्।
बृहदुरः श्रियो वीक्ष धाम ते
मुहुरतिस्पृहा मुह्यते मनः॥१७॥
व्रजवनौकसां व्यक्तिरङ्गते
वृजिनहन्त्रयलं विश्वमङ्गलम्।
त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां
स्वजनहृद्रुजां यन्निषूदनम् ॥१८॥
यत्ते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेषु
भीताःशनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु।
तेनाटवीमटसि तद् व्यथते न किंस्वि-
त्कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः ॥१९॥

॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे
पूर्वार्धे रासक्रीडायां गोपीगीतं समाप्तम् ॥

मधुराष्टकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥1॥

वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥2॥

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरौ पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥3॥

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥4॥

करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं स्मरणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥5॥

गुंजा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥6॥

गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं भुक्तं मधुरम्।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥7॥

गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
बलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥8॥

॥ इति मधुराष्टकम् ॥

जय गुरुदेव

एक तुम्ही आधार ओ सतगुरु।।एक.।।
जब तक मिलो न तुम जीवन मे
शान्ति कहाँ मिल सकती मन में।
खोज फिरा संसार सतगुरु।।एक।।
कैसा भी हो तैरन हारा
मिले न जब तक शरण तुम्हारा
हो न सका उस पार सतगुरु।।एक।।
हे प्रभु तुम ही विविध देवों में
हमें बचाने भव दु:खों से
ऐसे परम उदार सतगुरु।।एक।।
हम आये हैं द्वार तुम्हारे
अब उद्धार करो सब दु:ख हमारे।।
सुनलो दास पुकार सतगुरु।।एक।।
हो जाता जग में अंधियारा
तब पाने प्रकाश की धारा
आते तेरे पास सतगुरु।।एक.।।

राम भजूँ पर गुरू न बिसारूँ

राम भजूँ पर गुरू न बिसारूँ
गुरु के सन्मुख हरि न निहारूँ
राम भजूँ पर गुरू न बिसारूँ
हरि नैनन में दियो जल माहीं
गुरु के सन्मुख हरि न निहारूँ
हरि ने पाँच चोर दिए साथा
गुरु ने इनसे सबै बचाई
गुरु के सन्मुख हरि न निहारूँ
हरि ने भोग रोग उलझायो
गुरु जोगी सम सबै छुड़ाई।।गुरु के।।

पधारो नाथ कीर्तन में

(प्रार्थना)

पधारो नाथ कीर्तन में, हृदयँ मन्दिर सजाया है।
तुम्हारे वास्ते आसन, विमल मन का बिछाया है।।टेक।।
लिए जल नेत्र पात्रों में, खड़े पद कञ्ज धोने को।
पहन लो प्रेम का गजरा, बहुत रुचिकर बनाया है।।टेक।।
सजाया है भवन हमने, अधिक अनुराग से स्वामी।
नया दृश्य इस कीर्तन का, बहुत सुन्दर सजाया है।।टेक।।
नहीं है वस्त्र आभूषण, करूँ स्वामी तुम्हे अर्पण।
यही पद भेंट है केवल, जिसे गाकर सुनाया है।।टेक।।

सन्तन के संग

सन्तन के संग लाग रे तेरी अच्छी बनेगी ।
संतन के संग पुण्य कमाई ।
होय तेरो बड़ भाग रे तेरी.....।।
मोह निशा में बहु दिन सोयो ।
जाग सके तो जाग रे तेरी.....।।
सुत बित नारि तीन आशाएँ ।
त्याग सके तो त्याग रे तेरी.....।।
संतन के संग हंस बनोगे ।
गुरु चरनन अनुराग रे तेरी.....।।
कागा से तोहे हंस बनावे ।
राम भजन में लाग रे तेरी.....।।

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे
हेनाथ नारायण वासुदेव 2
गोविन्द मेरी यह प्रार्थना है
भूलूँ न मैं नाम कभी तुम्हारा
निष्काम होके दिन रात गाऊँ।।हे नाथ ।।
देहान्त काले तुम सामने हो
बंशी बजाते मन को लुभाते 2
गाते यही तन नाथ त्यागूँ ।।हे नाथ ।।
माता यशोदा हरि को जगावे
गोपाल जागो अब नैन खोलो 2
सरे खड़े तुझे गोप बुला रहे हैं।।हे नाथ ।।
बैठी लिये है दुहनी अनोखी
गो दुग्ध काढ़े अबला नवेली 2
गो दुग्ध धारा संग गा रही है।।हे नाथ।।

श्री बाँके बिहारी रे दूर करो दुख मेंरा

श्रीबाँके बिहारी रे दूर करो दुख मेंरा
सुना है जो तेरी शरण में आवे ।
उसके दुखड़े सब मिट जावे ।
मैं आयो शरण तिहारी रे
प्यारे दूर करो दुख मेंरा।।
जनम जनम का मैं हूँ भटका ।
बेंड़ा बीच भँवर में अटका 2
अब पार करो बनवारी रे, प्यारे.।।
शबरी अहिल्या गणिका नारी
सबही तुमने पार उतारी 2
अब आई मेरी बारी रे प्यारे.।।
मोर मुकुट पीताम्बर धारी
संग में है श्रीराधा प्यारी 2
अरे मीरा के गिरधारी रे
प्यारे दूर करो दु:ख मेंरा।।

श्याम तेरे मिलने का

दुनिया वाले क्या जाने मेरा रिस्ता पुराना है ।।
रामायण मे खोजा तुम्हे गीता मे पाया है
भागवत जी के पन्ने में मेरे श्याम का ठिकाना है।।श्याम।।
मथुरा में खोजा तुम्हें गोकुल में पाया है
वृन्दावन की गलियों में मेरे श्याम का ठिकाना है।।श्याम।।
ग्वालों में खोजा तुम्हे गोपियों में पाया है
राधा जी के हृदय में मेरे श्याम का ठिकाना है ।।श्याम।।
मन्दिरों में खोजा तुम्हें जंगलों में पाया है
भक्तों के हृदय में मेरे श्याम का ठिकाना है।।श्याम।।
फूलों में खोजा तुम्हें कलियों में पाया है
तुलसा जी के पत्तों में मेरे श्याम का ठिकाना है।।श्याम।।

लाड़ली श्रीराधे

इक कोर कृपा की करदो लाड़ली श्रीराधे ।
लाड़ली श्रीराधे स्वामिनी श्रीराधे ।।
दासी की झोली भरदो स्वामिनी श्रीराधे।।1।।
मैं तो राधा राधा सदा ही रटूँ।
कभी द्वारे से लाड़ली के मैं ना हटूँ।
मेरे शीष कमल पग धरदो स्वामिनी श्रीराधे ।।2।।
मेरी आस न टूटने पाये कभी ।
इस तन से प्राण जाये तभी।।
मुझे निज दर्शन का वर दो स्वामिनी श्रीराधे।।3।।
मुझे प्रीति की रीति सिखा दीजिये।
निज नाम का मंत्र बता दीजिये ।।
मेरे मन कि व्यथा सब हरदो स्वामिनी श्रीराधे ।।4।।

गोविन्द कथा सुनाने वाले

हरि नाम सुनाने वाले गोविन्द कथा सुनाने वाले ।
तुमको लाखो प्रणाम तुमको मेरा प्रणाम ।।

हम भूल रहे थे वन मे बल खो बैठे थे तन में ।
हो राह बताने वाले गोविन्द कथा सुनाने वाले।।तुमको।।

हम ले विषयो का प्याला जा रहे थे यम के गाला।
हो सुधा पिलाने वाले हरि कथा सुनाने वाले ।।तुमको।।

हम पार तेरा क्या पावें बस शीष झुका यहि गावें
वो प्रेम लुटाने वाले हो ज्ञान सुनाने वाले ।।तुमको।।

तुम घट घट अन्तरयामी हम पतित और अज्ञानी।
वो कृष्ण मिलाने वाले गोविन्द दरश कराने वाले
।। तुमको लाखों प्रणाम तुमको मेरा प्रणाम।।

संकीर्तन

गुरुदेव तुम्हारी जय होवे
जय होवे तेरी जय होवे।।गुरुदेव.।।

राम नाम के हीरे मोती

राम नाम के हीरे मोती मै बिखराऊँ गली गली
ले लो रे कोई राम का प्यला सोर मचाऊँ गली गली।।

माया के दीवानो सुनलो इक दिन ऐसा आएगा
धन दौलत और माल खजाना यहीं पड़ा रह जाएगा।।
सुन्दर काया माटी होगी चर्चा होगी गली गली– ले लो रे.।।

क्यों करता है मेरा मेरी यह तो तेरा मकान नहीं
झूठे जग मे फंसा हुआ है वह सच्चा इंशान नहीं
जग का मेला दो दिन का है अन्त में होगी चलाचली–ले लो रे।।

जिन जिनने ये मोती लूटे वो तो माला माल हुए
धान दौलत के बने पुजारी आखिर वो कंगाल हुए
चांदी सोने वालो सुनलो बात सुनाऊँ खरी खरी–ले लो रे।।

राम नाम मस्तानी मै तो नाचूँगी

राम नाम मस्तानी मै तो नाचूँगी ।
मै हूँ एक दिवानी मै तो नाचूँगी ।। मैं ।।

अनहक बाजे ढोलक सुरता बजती है2
मनमें उठे हिलोर पायल बजती है 2
पीली है अनछानी मै तो नाचूँगी ।। मैं ।।

साँवरिया साजन को संग नचाऊँगी 2
लोक लाज तजि ऐसी धूम मचाऊँगी 2
देखूँ लाभ न हानी मै तो नाचूँगी ।। मै ।।

तन्मय होकर महाप्रभू भी नाचे थे 2
संगत में निर्दोष के घुंघरू बाजे थे 2
नाचे अवगड़ दानी मै तो नाचूँगी।। मैं ।।

कुछ पाने के खातिर तेरे दर

कुछ पाने के खातिर तेरे दर
हम भी झोली फैलाये खड़े है ।।

कुछ न कुछ तो मिलेगा यहाँ से 2
यही आशा लगाये खड़े हैं ।। कुछ ।।

तुमने सब कुछ जहाँ मे बनाया
चाँद तारे जमी आसमा भी
चलते फिरते ये माटी के पुतले
तुमने कैसे सजाये हुए हैं ।। कुछ ।।

हो गुनहगार कितना भी कोई
हिसाब मांगा न तुमने किसी से
तुमने औलाद अपनी समझकर
सबके अवगुण छिपाये हुए हैं ।। कुछ।।

हरदेश में तू(विराटस्वरूप)

हरदेश में तू हर भेष में तू
तेरे रूप अनेक तू एक ही है।
सागर से उठा बादल बन कर
बादल से गिरा वरसा बन कर
फिर नहर बनी नदिया गहरी
तेरे भिन्न प्रकार तू एक ही है।।तेरे.।।
तेरी रंग भूमि यह विश्व भरा
हर खेल में तू हर मेल में तू
तेरे भिन्न प्रकार तू एक ही है।।तेरे.।।
शक्ति से अणु परमाणु बना
फिर जीव जगत का रूप लिया
फिर पर्वत वृक्ष पहाड़ बने
तेरे भिन्न प्रकार तू एक ही है।।तेरे.।।

कन्हैया तुम्हे

कन्हैया तुम्हे इक नजर देखना है
जिधर तुम छिपे हो उधर देखना है ।।

कन्हैया तुम्हे इक नजर देखना है ।
उबारा था जिस कर से गीध और गज को
उन्ही हांथों का अब हुनर देखना है ।।कन्हैया।।

विदुर भीलनी के जो घर तुमने देखे ।
तो तुमको हमरा भी घर देखना है ।। कन्हैया।।

टपकते हैं दृग विन्दु तुमसे ये कहकर ।
तुम्हे अपनी उल्फत में तर देखना है ।।कन्हैया।।

शरण आ गया

बहुत दिन से तारीफ सुनकर तुम्हारी
शरण आ गया श्याम सुन्दर तुम्हारी ।।

जो अब टाल दोगे मुझे अपने दर से ।
तो होगी हंसी नाथ दर दर तुम्हारी ।।टेक।।

सुना है कि उनको न करुणा सताती ।
जो रहते है करुणा नजर पर तुम्हारी।।टेक।।

यही प्रार्थना है यही यचना है ।
जुदा हों न नजरों से पल भर तुम्हारी।।टेक।।

यह दृग विन्दु तुमको खबर दे रहे है ।
कि है याद दिल में बराबर तुम्हारी।।टेक।।

नटवर नागर नन्दा भजो रे मन गोविन्दा।

नटवर नागर नन्दा भजो रे मन गोविन्दा।
श्याम सुन्दर मुख चन्दा भजो रे मन गोविन्दा।।

तू ही नटवर तू ही नागर तू ही बाल मुकुन्दा ।।टेक।।
सब देवन मे कृष्ण बड़े हैं ज्यों तारन बिच चन्दा।।टेक।।
सब सखियन मे राधा जू बड़ी हैं ज्यो नदियन में गंगा।।टेक।।
वृन्दावन की कुञ्ज गलिन में नाचत बाल मुकुन्दा ।।टेक।।
ध्रुव तारे प्रह्लाद उबारे नरसिंह रूप धरन्ता।।टेक।।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर काटत यम को फंदा ।।टेक।।

बड़ी देर भइ बड़ी देर भई

बड़ी देर भई बड़ी देर भई
कब लोगे खबर मोरे राम
बड़ी देर भइ बड़ी देर भई।
कहते हैं तुम हो दया के सागर
फिर क्यों खाली मेरी गागर
झूमे झुके कभी ना बरसे
कैसे हो तुम श्याम . . . हे राम–हे राम!
बड़ी देर . . . . . .
सुनके जो बहने बन जाओगे
आप ही छलियो कहलाओगे
मेरी बात बने ना बने
हो जाओगे तुम बदनाम . . . हे राम–हे राम!
बड़ी देर . . . . . .
चलते चलते मेरे पग हारे
आई जीवन की शाम . . . हे राम–हे राम!
बड़ी देर भइ–बड़ी देर भई।
कब लोगे खबर मोरी राम।।

जमुना किनारे मेरो गाँव

जमुना किनारे मेरो गाँव साँवरे आजइयो।
यमुना किनारे मेरी ऊँची हवेली
मै वृज की गोपिका नवेली
राधा रंगीली मेरो नाम
कि बंशी बजा जइयो।।
मल मल के स्नान कराऊँ
घिस–घिस चन्दन खौर लगाऊँ
पूजा करूँगी सुबह शाम
कि माखन खा जइयो।।
खस– खस का बगला बनाऊँ
चुन चुन कलियाँ सेज बिछाऊँ
धीरे–धीरे दाबूँ तेरे पाँव
कि प्रेम रस पा जइयो।।
देखती रहूँगी बाट तुम्हारी
जल्दी अइयो कृष्ण मुरारी
झाँकी करेगी वृज नारि
कि हंस मुस्काय जइयो।।

सोच ले समझले प्राणी

सोच ले समझले प्राणी तेरी थोड़ी सी जिन्दगानी
जपले श्यामा श्याम नाम तेरे बने बिगड़े काम
नहीं तो छूट जाए राजधानी...2।।सोचले।।
तेरी काया की हवेली यहीं पर रहेगी
हवेली ये समशान मे जा जलेगी
ये माया तेरे तेरे संग न चलेगी2
रोएँगे सारे जब डोली उठेगी2
तेरे जीवन की बीती कहानी2...।।सोचले।।
अब तू करले भजन तेरा कल्याण होगा
पार भव से तरेगा ये आसान होगा
तेरा मालिक भी तुझपर मेहरबान होगा
इस जनम में भी अच्छा तू इन्सान होगा
ये दुनियाँ तो है आनी जानी
ये दुनियाँ तो है आनी जानी2...।। सोचले।।
नाम रह जायेगा तेरा संसार में
नाम डूबा तो डूबेगा मझधार में
क्यों तू करता ये अधरम बेकार में
बस तेरा ठिकाना प्रभु के द्वार में
नाम की बस रहेगी निसानी2...।।सोचले।।
क्यों तू पागल हुआ भूला प्रभु नाम को
अपने मन में बसाले श्यामा श्याम को
दूर जाना मती छोंड़ नन्द गांव को2
आस मन में लगाले हरी नाम को2
प्रीति कान्हा से तेरी 2...।।सोचले।।

क्या भरोसा है इस जिन्दगी का

क्या भरोसा है इस जिन्दगी का
साथ देती नहीं ये किसी का।।टेक।।
स्वाँस रुक जाएगी चलते चलते
शमाँ बुझ जाएगी जलते जलते
दम निकल जएगा रोशनी का।।टेक।।
दुनिया है हकीकत पुरानी
चलके रुकना है इसकी रवानी
फर्ज पूरा करो बन्दगी का।।टेक।।
हम रहें न मुहब्बत रहेगी
दास्ताँ अपनी दुनिया कहेगी
नाम रह जाएगा आदमी का।।टेक।।

आज हरि आए

आज हरि आए विदुर घर पावणा
विदुर नहीं घर थी विदुरानी
आवत देखे सारंग पाणी
फूली अंग समावे न चिन्त्या
भोजन कहाँ जिमावणा।।आज।।

केला भोग प्रेम से ल्याई
गिरी गिरी सब देत गिराई
छिलका देत श्याम मुख मांही
लागे भोग सुहावणा।।आज।।

इतने माय विदुरजी आये
खारे खोटे वचन सुनाये
छिलका देत श्याम मुख मांही
कहाँ गवाँई भावणा।।आज।।

केला लिया विदुर कर मोही
गिरि देत गिरिधर मुखमांही
कहें कन्हैया सुनो विदुर जी
वो स्वाद नहि आवणा।।आज।।

बासी कूसी रूखे सूखे
हम तो विदुर जी प्रेम के भूखे
शम्भु सखी धन-धन विदुरानी
भक्तन मान बढ़ावणा।।आज।।

दाता तेरा मेरा प्यार कभी न बदले

दाता तेरा मेरा प्यार कभी न बदले।
दाता मेरा ये विचार कभी न बदले।।
द्वार तेरे पे आता रहूँ मैं
चरणों में शीष झुकाता रहूँ मैं ।
मेरा यह व्यवहार कभी न बदले ।।दाता।।
अपना हो चाहे हो बेगाना
रूठे चाहे सारा जमाना
चाहे सारा संसार भले ही बदले।।दाता।। 2।।
सत्संग तेरा छोड़ूँ कभी ना
मुख भी तुमसे मोड़ूँ कभी ना ।
मन से मन का ये तार कभी न बदले।।दाता।।3।।

ना मैं मीरा ना मै राधा

ना मैं मीरा ना मै राधा
फिर भी श्याम को पाना है ।
पास हमारे कुछ भी नही है
केवल भाव चढ़ाना है ।।
जब से तेरी सूरत देखी
तुममे प्रेम की मूरत देखी ।
अपना तुम्हे बनाना है ।।ना मै।।
और किसी को मै क्या जानू
अपनी लगन को सब कुछ मानूँ।
दिल का दर्द सुनाना है ।। ना मै।।
जनम जनम से भटकी मोहन
युग युग से मै भटकी प्रीतम ।
अब नहीं तुम्हे भुलाना है ।।ना मै।।
दासी तुम्हारी शरण मे आई
लगन मिलन की मन मे जगाई ।
ज्योत से ज्योत जलाना है ।।ना मै।।

नीको लगे री वृन्दावन(वाराह प्रसंग)

नीको लगे री वृन्दावन हमे तो बड़ो नीको लगे
घर-घर तुलसी ठाकुर सेवा
दर्शन बिहारी जी को ।।हमे तो.।।
रतन सिंहासन आप बिराजे
मुकुट धरैं तुलसी को।।हमे तो.।।
वृन्दावन में गाय बहुत हैं
खयवो दूधा दही को।।हमे तो.।।
कुञ्जन-कुञ्जन फिरत राधिका
शब्द सुनत मुरली को।।हमे तो.।।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर
भजन बिना नर फीको।।हमे तो.।।

मेरा गोपाल गिरधारी

मेरा गोपाल गिरधारी जमाने से निराला है।
रंगीला है रसीला है न गोरा है न काला है।।टेक।।
कभी सपनों में आ जाना कभी रूपों में हो जाना।
यह तरसाने का मोहन ने निराना ढंग निकाला है।।टेक।।
मजे से दिल में आ बैठो मेरे दिल में बस जाओ।
अरे गोपाल मन्दिर ये तुम्हारा देखा भाला है।।टेक।।
कभी ऊखल में बंध जाना कभी ग्वालों में जा मिलना।
तुम्हारी बाल लीला में अजब धोखे में डाला है।।टेक।।
कभी वो रूठ जाता कभी वो मुस्कुराता।
इसी दर्शन के खातिर तो बड़ी नाजो से पाला है।।टेक।।
तुम्हें मैं भूल जाऊँ पर मगर भूलते नहीं बनता।
तुम्हारी सांवली सूरत कुछ जादु सा डाला है।।टेक।।
तुम्हें मुझ जैसे हजारों हैं मगर मेरे तुम्हीं तुम हो।
तुम्हीं सोचो हमारी और कौन सुनने वाला है।।टेक।।

मै तो जपूं सदा तेरा नाम

मै तो जपूं सदा तेरा नाम दयालू दया करो ।
दयालू दया करो कृपालू कृपा करो ।।
द्वार खड़े हैं भक्त तुम्हारे ।
अपनी दया के खोलो द्वारे
पूरन हों सब काम।।दयालू ।।1 ।।
भजन कीर्तन गाऊँ मैं तेरा
नित उठ नाम ध्याउँ मैं तेरा
कृष्ण कृष्ण श्री राम –दयालू ।।
जहँ देखूँ वहँ सूरति तेरी
मन में बस गई मूरति तेरी
शरण में लेलो मेरे राम –दयालू।।
साधु सन्त की संगति देना
नाम अपने की रंगति देना
दास बनालो घनश्याम।।दयालू।।

मेरा गोविन्द है अनमोल मै तो नाचूँगी ।

मेरा गोविन्द है अनमोल मै तो नाचूँगी ।
मेरा गोविन्द है गोपाल मै तो नाचूँगी ।।
नाचूँगी मै गाऊँगी.2 मै उनको खूब रिझाऊँगी2।
मै भूल गई व्यवहार मै तो नाचँगी ।। मेरा।।
राधा नाचे मीरा नाचे
नाचा है संसार मै तो नाचूँगी ।। मेरा।।
गोपी नाचे ग्वाला नाचे
नाचें है नर नार मैं तो नाचूँगी ।।मेरा।।
सूरज नाचे चन्दा नाचे
नाचा है ब्रह्माण्डमैं तो नाचूँगी ।। मेरा।।

हे बांके बिहारी गिरिधारी

हे बांके बिहारी गिरिधारी हो प्यार तुम्हारे चरणों में ।
नटवर मधुसूदन वनवारी हो प्यार तुम्हारे चरणों में ।।
मैं जग से ऊब चुका मोहन सब जग को परख चुका सोहन
अब शरण तिहारी गिरिधारी हो .....।।
भाई सुत दार कुटुम्बी जन मैं मेरे के सबरे बन्धन
सब स्वारथ के ये संसारी हो.....।।
पापी या जापी नर नारी इन चरणों से जिनकी यारी
उनके हरि हो तुम भय हारी हो.....।।
मैं सुख में रहूँ चाहे दु:ख में रहूँ कांटों में रहूँ फूलों में रहूँ
बन में घर में मैं जहाँ भी रहूँ हो .....।।
मन के मन्दिर में आओ तुम नस नसमें श्याम समाओ तुम
तुम्हरे हैं हम हमरे हो तुम हो.....।।
इस जीवन के तुम जीवन हो हे श्याम तुम्ही मेरे धन हो
सुख शान्ति मूल तव चिन्तन हो हो.....।।

जड़ भरत प्रसंग

राम जी की चिड़िया राम जी का खेत
भर भर चिड़ियो खाओ पेट ।।

राम तुम बड़े दयालू हो

राम तुम बड़े दयालू हो हरि जी तुम बड़े दयालू हो।
और न कोइ हमारा है मुझे इक तेरा सहारा है
नैया डोल रही मेरी हरि जी अब करो न तुम देरी ।।
नाथ तुम बड़े दयालू हो ।
तेरा यश गाया वेदो नें पार नहिं पाया वेदो नें।
नेति नेति गाया वेदों ने हरि जी तुम .....।।
भले हैं बुरे हैं तेरे हैं तेरी माया के फेरे हैं ।
फिर भी बालक तेरे हैं हरि जी .....।।
पद – जनम जनम फूला फिरा पाया राम न नाम ।
अबकी अंगली संयोग हो सुमिरूँ मैं आठो याम ।।

मुख मागा फल सब को देती

मुख मागा फल सब को देती माता शेरा वाली
माता ज्योता वाली
तीन लोक के रत्नों से मां भरे तेरे भंडार है
सबका कष्ट निवारण करता तेरा माँ दरवार है।।
राई से राई कर देना तेरा एक इशारा माँ
तेरे सिवा अब कौन करे माँ भक्तो की रखवाली।।माता।।
जो कोइ जैसी इच्छा लेकर अता है तेरे चरणो मे।
उसको सब सुख मिल जाता है तेरे सुन्दर भवनों में।।तेरे।।
अपनी ममता के आँचल की हमको दे दे छाँव माँ।
ढूढ़ रही है तेरा सहारा हर भक्तों की छाया माँ।।तेरे।।
तेरे करुणा के सागर से आये बुझाने प्यास माँ।
अपने अपने मन में माला लाये हैं सब आश माँ ।।तेरे।।
पूरी हो जाये हर इक आशा अब न रहे निराशा।
कोई खुशी संसार की माता अब हमसे मुख फेरे ना।।तेरे।।

शंकर तेरी जटाओं से

(सती प्रसंग)

शंकर तेरी जटाओं से बहती है गंग धारा।
हे जोगी अगम अपारा–है जोगी अगम अपारा।।
है तन पे भस्म रमाये मस्तक पर चन्द्र सुहाए।
उठ धरी शब्द ओंकारा है जोगी अगम अपारा।।
तुम कण्ठ कहलाये तेरे अंग भुजंग सुहाए।
करमें त्रिशूल उजियारा है जोगी अगम अपारा।।
बाघाम्बर आसन पाये गोरी वामांग सुहाए।
डमरू ध्वनि होत अपारा है जोगी अगम अपारा।।
सुर महिसुर नरमुनि गाई सब तेरा ध्यान लगाई।
विश्वम्भर अगम अपारा है जोगी अगम अपारा।।

मेरा आपकी कृपा से सब काम हो रहा है

(ध्रुव प्रसंग)

मेरा आपकी कृपा से सब काम हो रहा है
करते हो तुम कन्हैया मेरा नाम हो रहा है
पतवार के बिना ही मेरी नाव चल रही है
हैरान है जमाना मंजिल भी मिल गई है
करता नहीं हूँ कुछ भी सब काम हो रहा है
करते हो तुम कन्हैया . . . . . .
तुम साथ हो जो मेरे किस चीज की कमी है
किसी और चीज की अब दरकार ही नहीं है
तेरे साथ से गुलाम अब गुलफाम हो रहा है
करते हो तुम कन्हैया . . . . . .
मैं तो नहीं हूँ काबिल तेरा प्यार कैसे पाऊँ
टूटी हुई वाणी से गुणगान कैसे गाऊँ
तेरी प्रेरणा से ही सब ये कमाल हो रहा है
करते हो तुम कन्हैया . . . . . .

दशा मुझ दीन की भगवन्

(वृत्रासुर प्रसंग)

दशा मुझ दीन की भगवन् सम्हालोगे तो क्या होगा।
अगर चरणों की सेवा में लगा लोगे तो क्या होगा।।दशा.।।
मै नामी पातकी हूँ और नामी पापहर तुम हो।
ये लज्जा दोनो नामों की बचालोगे तो क्या होगा।।दशा.।।
जिन्होनें तुमको करुणाकर पतित पावन बनाया है।
उन्हीं पतितों को तुम पावन बनालोगे तो क्या होगा।।दशा।।
यहाँ सब मुझसे कहते हैं तू मेरा है तू मेरा है।
मै किसका हूँ ये झगड़ा तुम मिटादोगे तो क्या होगा।।दशा।।
अजामिल गीध गणिका जिस दया गंगा में तारे हैं।
उसी में बिन्दु सा पापी मिलालोगे तो क्या होगा।।दशा.।।

कर बन्दगी और भजन धीरे-धीरे

करो बन्दगी और भजन धीरे-धीरे
मिलेगी प्रभु की शरण धीरे-धीरे।।

दमन इन्द्रियों का तू करता चला जा-4
काबू में आयेगा मन धीरे-धीरे।।

सुनें कान तेरे सदा सन्त-वाणी-4
तू कर सन्तवाणी का मनन धीरे-धीरे।।

सफर अपना आसान करता चला जा-4
छूटेगा आवागमन धीरे-धीरे।।

तू दुनिया में शुभ काम करता चला जा-4
तू कर शुद्ध अपना चलन धीरे-धीरे।।

मेरे शिर पर हाँथ रखदो राधा रानी

मेरे शिर पर हाँथ रखदो राधा रानी
वृन्दावन का वास दे दो राधारानी
चरण कमल का वास दे दो राधारानी।।
दर्शन होवे आस यही है,
मेरे मन की प्यास यही है।
दर्शन दे के प्यास बुझाओ,
मेरे सोय भाग जगाओ।।
आज मेरी लाज रख दो राधारानी।।टेक।।
बड़ी दूर से चल कर आई,
देखो क्या-क्या चीज मैं लाई।
चरण कमल के पास रख लो राधारानी।।टेक।।
अँसुअन मोती हार पिरोया,
श्रद्धा प्रेम से सूत्र भिंगोया।।
चरण कमल के पास रख लो राधारानी।।टेक।।

कृपा की न होती जो आदत तुम्हारी

कृपा की न होती जो आदत तुम्हारी ।
तो सूनी हि रहती अदालत तुम्हारी ।।
जो दीनो के दिल में जगह तुम न पाते।
तो किस दिल मे होती हिफाजत तुम्हारी।।
गरीबों कि दुनियाँ है आबाद तुमसे ।
गरीबों से है बादसाहत तुम्हारी ।।
न तुम होते हाकिम न हम होते मुजरिम।
न घर घर मे होती इबादत तुम्हारी ।।
तुम्हारी हि उल्फत के दृग विन्दु हैं ये।
तुम्हें सौपते है अमानत तुम्हारी ।।
कृपा की न होती जो आदत तुम्हारी ।
तो सूनी हि रहती अदालत तुम्हारी ।।

मेरा दिल तुझपे कुर्वा

मेरा दिल तुझपे कुर्वा मुरलिया वाले रे
मुरलिया वाले रे सांवरिया प्यारे रे ।। हो।।
मै तो तेरा इक दीदार चाहूँ
दीवाना तेरा तेरा प्यार चाहूँ
मेरा दिल तुझपे बागवाँ
मुरलिया वाले रे सांवरिया प्यारे रे ।। हो।।
चाहे कुछ भी कहे ये जमाना
पागल हुआ ये तेरा दीवाना
मेरे दिल की तू दुनिया
मुरलिया वाले रे सांवरिया प्यारे रे।। हो.।।
देखी है जबसे ये तस्वीर तेरी
तब से बदल गई है तकदीर मेरी
अब तू होजा मेहरवां
मुरलिया वाले रे सांवरिया प्यारे रे ।। हो।।

मोहिनी रूप बनायो (मोहिनीरूप)

मोहिनी रूप बनायो बिहारी जी ने
लँहगा पैहर ओढ़ सिर चूनर
अँगिया जरद किनारी ।।बिहारी.।।
माँग सिन्दूर नैन दियो कजरा
मांथे बिदित अति प्यारी ।।बिहारी.।।
गल कण्ठा मोतियन की माला
नथ सोहे झलकारी ।।बिहारी.।।
बाजू बन्द करन में पहुँची
चूड़ी रुचे अति प्यारी ।।बिहारी.।।
हम हमेल कौंधनी कटि में
पायल झनके अति प्यारी ।।बिहारी.।।

कौन पावे याको पार

कौन पावे याको पार
प्रेम नदिया की सदा उल्टी बहे धाार।
देखो मैं सुनाऊँ एक बात अनमेल।
ब्रह्म निराकार रहो गोकुल मे खेल।।
नन्द यशोदा के द्वार – प्रेम।
जननी की गति दई पूतना कू पेल।
विष देने आई पाई मुक्ति रेल पेल
खुले स्वर्ग के किवार – प्रेम।।
तीन पैर भूमि याने बली लियो छल।
चौखट न लांघी जाय रह्यो है मचल।।
जाने खम्भ दीन्हो फार – प्रेम।।
विष्नु अवतारी विश्व पोषन करन
सोई करैं चोरी यहां अहिरन घरन ।।
निज प्रभुता विसार – प्रेम।।
गोपी वनों शिव जाने काम कियो जेर
ठुम ठुम नाचे गौरा हंसे मुख फेर।।
नन्दी बैल को सवार –प्रेम।।
प्रेम को प्रमुख श्री वृन्दावन धाम
प्रेम ही सो पायो श्याम रसिया ने नाम।
वाहे जाने कहा गवार –प्रेम।।

दिगम्बर हो तो ऐसा हो

सदाशिव सर्व–वरदाता दिगम्बर हो तो ऐसा हो
हरे सभी दु:ख भक्तों के दयाकर हो तो ऐसा हो

शिखर कैलाश के ऊपर कल्प–तरूओं की छाँव में
रमे नित संग गिरजा के रमणधर हो तो ऐसा हो

शीश पर गंगा की धारा सुहाये भाल में लोचन
कला मस्तक में चन्द्रा की मनोहर हो तो ऐसा हो

भयंकर जहर जब निकला क्षीर–सागर के मन्थन से
धरा सब कण्ठ में जिसने जो विषधर हो तो ऐसा हो

सिरों को काटकर अपने, किया जो होम रापण ने
दिया सब राज्य दुनिया को दिलावर हो तो ऐसा हो

किया नन्द ने जा वन में, कठिन तप काल के डर से
बनाया खास गण अपना अमरकर हो तो ऐसा हो

बनाये बीच सागर में तीन–पुल दैत्य सेना ने
उड़ाये एक ही शर में त्रिपुरहर हो तो ऐसा हो

पिता के यज्ञ में जाकर तजी जब देह गिरजा ने
किया सब ध्वन्स पल भर में भयंकर हो तो ऐसा हो

हे गोविन्द हे गोपाल (गजेन्द्रमोक्ष)

हे गोविन्द हे गोपाल अब तो जीवन हारे
नीर पिवन हेतु गयो सिन्धु के किनारे ।।
सिन्धु बीच बसत ग्राह चरण गहि पखारो- हे।।
चार प्रहर युद्ध भयो लै गयो मझधारो ।
नाक कान डूबन लागे कृष्ण को पुकारो-हे।।
द्वारका में शब्द भयो सोर भयो भारी ।
शंख चक्र गदा पद्म गरुड़ लै सिधारो-हे।।

श्रीवृन्दावन धाम अपार

श्रीवृन्दावन धाम अपार रटे जा राधे राधे
राधे अलवेली सरकार रटे जा राधे राधे।।
राधे सब वेदन को सार रटे।।
जो राधा रधा गावें तहँ सुनिवे को हरि आवे।
वाको वेड़ा है जाय पार रटे।।
जो राधा नाम न होतो रसराज विचारो रोतो।
नहि लेते कृष्ण अवतार रटे.।।
वृन्दावन की लीला मत जानै गुड़को चीला।
याको वेद न पायो पार रटे।
तू वृन्दावन में आयो तैने राधे नाम न गायो।
तेरे जीवन को धिक्कार रटे।।
वृन्दावन राश रचायो शिवगोपी रुप बनायो।
अरे वंशीवट कियो विहार रटे ..।।

सीता राम दरश रस वरसे

सीता राम दरश रस वरसे
जैसे सावन की झड़ी,
चहुँ दिसि राम दरश रस बरसे
जैसे सावन की झड़ी।
सावन की झड़ी
प्यासे प्राणो पे पड़ी।।
राम लखन अनमोल नगीने
अवध अंगूठी में जड़ लीन्हे।
सीता ऐसे सोहे जैसे
मोती की लड़ी-सीता राम।।
राम सिया को रूप निहारी
नाचे गावें सब नर नारी।
चल री दर्शन करि आवे
का सोचत खड़ी ।। सीता राम।।
रोम रोम को नयन बनालो
राम सिया के दर्शन पालो।
वर्षों पीछे आई है ये
मिलन की घड़ी ।।सीता राम।

जनम लियो चारो भैया

जनम लियो चारो भैया-
अवध में बाजे बधैया
दशरथ के घर लाला जायो 2।
नाम धर्यो रघुरइया-अवध में ।।
राम लला की होत न्योछावर।
दधिा माखन थन गइया-अवध में।।
मुदित आशीष देत सब गुरुजन।
चिर जीवो चारो भैया - अवध में।।

आज अयोध्या की गलियों में

आज अयोध्या की गलियों में नाचे जोगी मतवाला।
अलख निरंजन खड़ा पुकारे देखूँगा तेरा लाला।।टेक।।
शैली श्रृंगी लिए हाथ तें और डमरू त्रिशूल लिए।
छमक छमाछम नाचे जोगी दरस की मन में चाह लिए।।
पग में घुँघरू छम छम बाजे कर में जपते हैं माला।।टेक।।
अंग भभूति रमावे जोगी बाघम्बर कटि में सोहे।
जटा जूट में गंग विराजे भक्त जनों के मन मोहे।।
मस्तक पर श्रीचन्द्र विराजे गले में सर्पन की माला।।टेक।।

तेरी मर्जी का मैं हूँ गुलाम

तेरी मर्जी का मैं हूँ गुलाम
मेरे अलबेले राम।
जो भी कराले मैं तुझपे निछावर
दौलत तेरी मेरा नाम-मेरे।।
थक भी गया हूँ इस लम्बे स्फर से ।
मेरा जीना हुआ है हराम -मेरे।।
तेरी रजा में करीली रजा है
अब दे दो सजा या इनाम -मेरे।।

राम का नाम लेकर जो मर जाएँगे

राम का नाम लेकर जो मर जाएँगे
वो अमर नाम दुनियाँ में कर जाएँगे।।
ये न पूछो कि मर कर किधर जाएँगे
वो जिधर भेज देगा उधर जाएँगे।।
ये श्वासो की माला हरि नाम की
फिर ये अनमोल मोती बिखर जाएँगे।।
अब यह मानो न मानो खुसी आपकी
हम मुसाफिर हैं कल अपनें घर जाएँगे।।

रामजन्म

जब जब होय धरम की हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी।।
तब तब धरि प्रभु विविध सरीरा। हरहिं कृपा निधि सज्जन पीरा।।
बाढ़े खल बहु चोर जुआरा। जे लंपट परधन परदारा।।
मानहिं मातु पिता नहिं देवा । साधुन्ह सन करवावहिं सेवा।।
अतिसय देखि धरम कै ग्लान। परम सभीत धरा अकुलानी ।।
अवधराज सुरराज सिराहीं । दशरथ धन लख धनद लजाहीं ।।
एकबार भूपति मन माहीं । भै गलानि मोरे सुत नाहीं ।।
धरहुं धीर होइहहिं सुत चारी । त्रिभुवन बिदित भगत भय हारी।।
सृंगी रिवि वशिष्ठ बोलावा । पुत्रकाम सुभ जग्य करावा ।।
भगति सहित मुनि अहुति दीन्हे । प्रगटे अगिनि चरू कर लीन्हे ।।

जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल।
चर अरु अचर हर्षजुत राम जनम सुख मूल।।

नौमी तिथि मधुमास पुनीता । सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता।।
मध्यदिवस अति सीत न घामा । पावन काल लोक विश्रामा।।
सीतल मंद सुरभि बह बाऊ । हरसि सुर सन्तन मन चाऊ ।।

सुर समूह बिनती, करि पहुँचे निज निज धाम ।
जगनिवास प्रभु प्रगटे अखिल लोक विश्राम ।।

श्रीरामचन्द्र प्राकट्य

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप विचारी।।
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुजचारी।।
भूषन बनमाला नयन विसाला सोभा सिन्धु खरारी।।
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहिं बिधि करौं अनन्ता।
मया गुन ग्याना तीत अमाना बेद पुरान भनन्ता।।
करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहिं गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित जलागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता।।
ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै।
उपजा जब ग्याना प्रभु मुस्काना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहैं।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहिं प्रकार सुत प्रेम लहै।
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहुँ तात यह रूपा।
कीजै शिशु लीला अति प्रिय सीला यह सुख परम अनूपा।
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुर भूपा।
यह चरित जे गावहिं हरि पद पावहि ते न परइ भवकूपा।

विप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार ।।

सुनि सिसु रुदन परम प्रिय बानी । संभ्रम चलि आईं सबरानी।।
हरषित जहँ तहँ धाई दासी । आनंद मगन सकल पुरबासी।।
दसरथ पुत्र जन्म सुनि काना । मानहुँ ब्रह्मानन्द समाना।।
परम प्रेम मन पुलक सरीरा । चाहत उठन करत मति धीरा।।
जाकर नाम सुनत सुभ होई । मोरे गृह आवा प्रभु सोई।।
परमानन्द पूरि मन राजा। कहा बोलाइ बजावहुँ बाजा।।
गुरु बशिष्ठ कहँ गयउ हंकारा। आए द्विजन सहित नृप द्वारा।।
अनुपम बालक देखेन्हि जाई । रूप रासि गुन कहि न सिराई।।

नन्दी मुख सराध करि, जात करम सब कीन्ह ।
हाटक धेनु बसन मनि नृप बिप्रन्ह कहँ दीन्ह ।।

श्री राम चन्द्र कृपालु भजुमन

श्रीराम चन्द्र कृपालु भजुमन हरण भव भय दारुणं
नव कंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुणं
कंदर्प अगणित अमित छवि नवनील नीरद सुन्दरं
पटपीत मानहु तड़ित रूचि शुचि नौमि जनक सुतावरं
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकन्दनं
रघुनन्द आनन्दकन्द कौशलचन्द्र दशरथ-नन्दनं
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारू उदार अंग विभूषणं
आजानुभुज शर-चाप धर संग्राम-जित खरदूषणं
इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन रंजन
ममहृदय कंज निवास कुरू कामादि खल-दल गंजन
मनु जाहि राचेउ मिलिहि सो वरू सहज सुन्दर साँवरो
करूणानिधान सुजान सील, सनेहु जानत रावरो
ऐहि भाँति गौरी अशीष सुनि सिय सहित हिय हर्षितअली
तुलसी भवानीहिं पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली

जानि गौरी अनुकूल सिय हिय हरषु न जाय कहि।
मंजुल मंगल मूल वाम अंग फरकन लगे।।

ओ जाने वाले रघुवर से

ओ जाने वाले रघुवर से प्रणाम हमारा कह देना ।
कहीं भूल न जाना रस्ते में प्रणाम हमारा कह देना ।।
वो राम लखन बनवासी से और सीता जनक दुलारी से।
और भरत शत्रुघन भैया से प्रणाम ।।
और राजा दशरथ रानी से और सारी बानर सेना से ।
और पवन पुत्र बजरंगी से प्रणाम ।।
ओ शिव शंकर कैलाशी से और उमा हमारी माता से।
और सुण्ड सुण्डाला गणपति से प्रणाम।।
ओ साधू संत सन्यासी से और गौऊ हमारी माता से ।
और वेद शास्त्र सब पुराणों से प्रणाम।।
बाल्मीकि की रामायण से और तुलसीकृत रामायण से।
और गीता वेद पुराणों से प्रणाम.....।।

आज मिथिला नगरिया निहाल सखिया

आज मिथिला नगरिया निहाल सखिया
चारो दुलहा मे बड़का कमाल सखिया।।
माथे मौरिया कुण्डल सोहे कनवाँ
कारे कारे कजरारे जुल्मी नयनवाँ ।
लाल लाल चन्दन सोहे इनके भाल सखिया।।आज।।
साँवर साँवर गोरे गोरे जड़िया जहान है
अँखिया न देखती सुन लीनी कान है ।
जुग जुग जोड़ी जिये बेमिसाल सखिया ।।आज।।
गगन मगन आजु मगन धरतिया
देख देख दुलहा के साँवरी सुरतिया ।
बाल वृद्ध नर नारी सब बेहाल सखिया।।आज।।
जिन का लागि जोगी मुनि जप तप कइलन
सो ही हमार मिथिला में मेहमान बनकर अइलन।
अब लोढ़ा से काढ़ब इनकर गाल सखिया।।आज।।

श्री राम जी हमारे सब काम कर रहे हैं

श्रीराम जी हमारे, सब काम कर रहे हैं,
हम राम के सहारे, विश्राम कर रहे हैं।।टेक।।
ये राम की कृपा है, कलियुग से कठिन युग में,
निश्चिन्त होकर हरि का, गुणगान कर रहे हैं।।टेक।।
ये राम की है महिमा, शंकर से सिद्ध योगी,
पीकर के विष हलाहल, विश्राम कर रहे हैं।।टेक।।
भक्तों की साधना की, खेती हरी भरी है,
करके कृपा की वर्षा, घनश्याम कर रहे हैं।।टेक।।
जो हो चुका जो होगा जो हो रहा है जग में,
विश्वास भक्त का है, सब राम कर रहे हैं।।टेक।।

दरबार मे राधा रानी के

दरबार में राधारानी के दुख दर्द मिटाए जाते हैं।
दुनिया के सताये लोग यहाँ सीने से लगाए जाते हैं।।
संसार नहीं रहने को यहाँ दुख ही दुख है सहने को यहाँ।
भर-भर के प्याले अमृत के यहाँ रोज पिलाये जाते हैं।।
पल-पल में आश निराश भई दिन-दिन घटती पल-पल रहती।
दुनियाँ जिनको ठुकरा देती वो गोद बिठाये जाते हैं।
जो राधा राधा कहते हैं वो प्रिया शरण में रहते हैं।
करतीं हैं कृपा वृषभानु सुता वही महल बुलाये जाते हैं।।
वो कृपामयी कहलाती है रसिकों के मन को भाती है।
दुनियाँ में जो बदनाम हुए पलकों में बिठाये जाते हैं।।

मेरे मालिक के दरवार में

मेरे मालिक के दरवार में सब लोगों का खाता ।
जो भी जैसी करनी करता वैसा ही फल पाता ।।
क्या साधू क्या सन्त गृहस्ती क्या राजा क्या रानी ।
प्रभु की पुस्तक में लि:खी है सब की करम कहानी
वो तो सबके जमा खर्च का सही हिसाब लगाता ।।मेरे।।
नहीं चले उसके घर रिश्वत नहीं चले चालाकी ।
उसकी अपनी लेन देन की रीत बड़ी है बाँकी ।।
पुण्य का बेड़ा पार लगाता पाप का नाव डुबाता ।।मेरे।।
उजली करनी करले रे बन्दे करम न करियो काला।
लाख आँख से देख रहा है तुम्हे देखने वाला ।।
अच्छी करनी करो रे भैया समय गुजरता जाता ।।मेरे।।

प्रेम से जिसने न देखी

प्रेम से जिसने न देखी मूर्ति भगवान की।
प्रेम जिसने न किया हो मूर्ति किस काम की।।प्रेम।।
प्रेम मीरा ने किया था प्रेम ने क्या-क्या किया।
विष के प्याला में भी देखी मूर्ति भगवान की।।प्रेम।।
प्रेम हनुमत ने किया था प्रेम ने क्या-क्या किया।
सीना फाड़ दिखा दिया है मूर्ति भगवान की।।प्रेम।।
प्रेम प्रह्लाद नें किया था प्रेम ने क्या-क्या किया।
लोहे के खम्भों में निकली मूर्ति भगवान की।।प्रेम।।

दूर नगरी बड़ी दूर नगरी

दूर नगरी बड़ी दूर नगरी
हाँ दूर नगरी बड़ी दूर नगरी
कैसे आऊँ मैं कन्हाई-2
तेरी गोकुल नगरी-बड़ी दूर नगरी
इत मथुरा उत गोकुल नगरी
बीच बहै यमुना गहरी . .बड़ी
पांव धरूँ तो पायल मोरी भीजै
पार करूँ तो बह जाऊँ सगरी . . बड़ी
धीरे-धीरे चलूँ तो कमर मोरी लचके
झटपट चलूँ तो छलकाये गगरी . . बड़ी
सखी संग आऊँ कान्हा लाज मोहे आवे
इकली आऊँ तो भूल जाऊँ डगरी .. बड़ी
रात को आऊँ कान्हा डर मोहे लागे
दिन को आऊँ तो देखे सारी नगरी .. बड़ी
मीराँ कहे प्रभु गिरिधर नागर
गिरिधर नागर मोरे नटवरनागर
तुम्हरे दरश बिन मैं तो हो गई बाँवरी .. बड़ी

जहाँ विराजे राधा रानी अलवेली सरकार

जहाँ विराजे राधाा रानी अलवेली सरकार
सवरिया ले चल परली पार 2।
पाप पुण्य सब तेरे अर्पण गुण अवगुण सब तेरे अर्पण।
बुद्धि सहित मन तेरे अर्पण ये जीवन भी तेरे अर्पण ।
मैं तेरे चरणों की दासी मेरे प्राण अधार ।। सावरिया।।
तेरी आस लगा बैठी हँ लज्जा शील गवाँ बैठी हूँ ।
आंखे खूब पका बैठी हूँ अपना आप लुटा बैठी हूँ ।।
सावरिया मैं तेरी रागिनी तू मेरा मल्हार ।। कन्हैया।।
जग की कुछ परवाह नही तेरे बिना कोई चाह नही
कोई सूझती राह नही है तेरे मिलन आस यही है
मेरे प्रीतम मेरे मालिक करदो बेड़ा पार ।। सावरिया ।
आनन्द धन यहाँ बरस रहा है पत्ता पत्ता हरष रहा है ।
भक्त बेचारा तरस रहा है पीके कोई बरस रहा है ।
बहुत हुई अब हार गई मै मेरे प्राण अधार ,
सावरिया ले चल परली पार ।।

कृष्ण जिनका नाम है

कृष्ण जिनका नाम है गोकुल जिनका धाम है
ऐसे श्री भगवान को बारम्बार प्रणाम है ।।
यशोदा जिनकी मैया है नन्द जू बपैया हैं ।
ऐसे श्री गोपाल को बारम्बार प्रणाम है ।।कृष्ण ।।
लूट लूट दधि माखन खावै ग्वालन के संग धेनु चरावै।
ऐसे लीलाधाम को बरम्बार प्रणाम है ।। कृष्ण ।।
द्रुपद सुता की लाज बचायो ग्राह से गज को फंद छुड़ायो।
ऐसे कृपानिधान को बारम्बार प्रणम है ।। कृष्ण ।।

स्वागतं कृष्णा सुस्वागतं कृष्णा

स्वागतं कृष्णा सुस्वागतं कृष्णा
स्वागतं सुस्वागतं शरणागतं कृष्णा ।।
स्वागतं कृष्णा सुस्वागतं कृष्णा ।
स्वागतं कृष्णा सुस्वागतं कृष्णा ।।
अभी आता ही होगा सलोना मेरा ।
हम राह उसी की तका करते हैं ।।
कविता सविता नहिं जानत हैं ।।
मन में आया सो बका करते हैं ।
स्वागतं कृष्णा सुस्वागतं कृष्णा ।।

भये प्रगट कृपाला दीन दयाला

भये प्रगट कृपाला दीन दयाला यशुमति के हितकारी
हर्षित महतारी रूप निहारी मोहन मदन मुरारी
कंसासुर जाना अति भय माना पूतना वेग पठाई
सो मन मुस्काई धाई गई जहाँ जदुराई
तेहि जाइ उठाई हृदय लगाई पयोधर मुखमें दीन्हें
तब कृष्ण कन्हाई मन मुस्काई प्राण तासु हर लीन्हें
जब इन्द्र रिसाये मेघ बुलाये वशीकरण ब्रजसारी
गौवन हितकारी मुनि मन हारी नख पर गिरिवर धारी
कंसासुर मारे अति हंकारे वत्सासुर संहारे
बकासुर आयो बहुत डरायो ताकर बदन बिडारे
अति दीन जानि प्रभु चक्रपाणि ताहि दीन निज लोका
ब्रह्मासुर राई अतिसुख पाई मगन हुए गये शोका
यह छन्द अनूपा है रसरूपा जो नर याको गावै
तेहि सम नहिं कोई त्रिभुवन माहिं मन वांछित फलपावै

दोहा: –नन्द यशोदा तय कियो मोहन सो मनलाय।
तासों हरि तिन्ह सुख दियो बाल भाव दिखलाय।।

नन्द जी के अँगना में

नन्द जी के आँगन में बज रही आज बधाई ।
सौ सौ बार बधाई लोगो लाखों बार बधाई ।।
चमत्कार सा होगया लोगो होगई बात निराली ।
रात रात में नन्द बाबा की दाढ़ी हो गई काली–नन्द।।
साठ साल को बूढ़ो देखो है गयो आज जवान ।
नाचे कूदे धूम मचावे मीठी बोले बानी–नन्द ।।
जुग जुग जीवे लाल तिहारो यह आशीष हमारी ।
ऐसे देय अशीष सबहिं मिलि गावहिं व्रजकी नारी–नन्द।।

जियो श्याम लाला

जियो श्याम लाला जियो श्याम लाला।
पीली तेरी पगड़ी रेग काला।।टेक।।
मथुरा से आए नन्द लाला
गोपियों से पड़ गया पाला।।टेक।।
मत रो कान्हा ऊआँ ऊआँ।
समझावे सुनन्दा बुआ।।टेक।।
खीर जलेबी पूड़ी लड्डू पुआ।
जसुमति घर आनन्द हुआ।।टेक।।
चरमर–चरमर करै पलना
वृजवासी गावैं जियो ललना।।टेक।।

पूत सपूत जन्यौ यशुदा

卐

पूत सपूत जन्यौ यशुदा
इतनी सुनि के वसुधासव दौरी
देवन के आनन्द भयौ
पुनि धावति गावत मंगल गौरी।
नन्द कछु इतनों जो दियो
न बची बछिया छछिया न पिछौरी।।

आज बर्फी सी वृज नारि बनी

卐

आज बर्फी सी वृज नारि बनी
गुझिया से गोप गूझा से ग्वाला
पेड़ा से प्यारे बने बलदेव जी
रस खीर सी रोहिणी रूप रसाला।।
नन्द महीप बने नमकीन
गोकुल गोप सब गरम मसाला।
जायो यशोदा जलेबी सी रानी ने
रबड़ी सी रात में लडुआ सौ लाला।।
मोतिन के चौक पूरे कंचन कलश धरे।
बन्दनवार द्वार पै बँधी हैं सारी हाल की।।
गुनिजन गान करें मुनिजन ध्यान धरें।

सपनेहुँ न पावैं मूरति गोपाल की।।
प्रेमि कहें यशुदा जी पालने झुलावैं नित्य।
मोतिन माल गले वग नखा ढाल की।।
चिर जीवै नन्द रानी कोटि बरस तेरौ सुत।
नन्द घर आनन्द भयौ जय कन्हैया लाल की।।

नन्द घर आनन्द भयो

नन्द घर आनन्द भयो जय कन्हैया लाल की।।
हाँथी देन्हे घोड़ा दीन्हे और दीन्हे पालकी।।नन्द घर।।
कौन को दीन्हे हाँथी कौन को दीन्हे पालकी।
छोरन को हाँथी घोड़ा बूढ़न को पालकी।।नन्द घर।।
छोरन को लड्डू पेड़ा बूढ़न को लापसी।
कंघा दीन्हे दर्पण दीन्हीं बिन्दी भाल की।।नन्द घर।।
रतन दीन्हें हार दीन्हें गाय व्यानी हाल की।
कण्ठा और कठुला दीन्हें दीन्हीं मुक्ता भाल की।।नन्द।।
जय यशोदा लाल की जय दाऊ दयाल की।
जय बोलो नन्दलाल की जय बोलो गोपाल की।।नन्द।।

यशोदा जायो ललना

यशोदा जायो ललना मैं यमुना पे सुनि आई
मैं यमुना मे सुनि आई मै बेदन में सुनि आई।।
मथुरा में याने जनम लियो है
गोकुल में झूले पलना मैं यमुना पे सुनि आई।।
ले वसुदेव चले गोकुल को
मारग मे गहरी यमुना मैं यमुना पे सुनि आई।।
काहे को याको बन्यो है पालन्यो
काहे को लागे फुंदना मैं यमुना पे सुनि आई।।
रतन जटित याको बन्यो है पालन्यो
रेशम को लागे फुंदना मैं यमुना पे सुनि आई।।
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवि
चिर जीवे तेरो ललना मैं यमुना पे सुनि आई।।

कन्हैया झूले पनला

कन्हैया झूले पलना नेक धीरे झोंटा दीजो
नेक धीरे झोंटा दीजो नेक होले झोंटा दीजो।।मेरो।।
मथुरा में याने जनम लियो है
गोकुल में झूले पलना नेक धीरे झोंटा दीजो।।मेरो।।
ले वसुदेव चले गोकुल को
याके चरण पखारे यमुना नेक धीरे झोंटा दीजो।।मेरो।।
काहे को याको बन्यो है पालन्यो
काहे को लागे फुंदना नेक धीरे झोंटा दीजो।।मेरो।।
रतन जटित याको बन्यो है पालन्यो
रेशम को लागे फुंदना नेक धीरे झोंटा दीजो।।मेरो।।
गोरे नन्द यशोदा गोरी
कारो जायो ललना नेक धीरे झोंटा दीजो।।मेरो।।
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवि
चिर जीवे तेरो ललनानेक धीरे झोंटा दीजो।।मेरो।।

नन्द लाला प्रगट भये आज

नन्द लाला प्रगट भये आज वृज में लडुआ बटे
सौ मन दूध की खीर बनाई
खीर बनाई और मेवा मिलाई
खावैं वृज के ग्वाल वृज में लडुआ बटे।।
हरे हरे गोबर अंगन लिपाये बीच चौक पे लाला बिठाये
हर्षे यसुदा मात वृज में लडुआ बटे।।
केशर कस्तूरी से भर तलैया
भरदो तलैया-और बांटो मिठैया
और मोहरों की करदो बौछार वृज में लडुआ बटे।।
मिल जुल के सब सखियाँ आई
नन्द द्वार पे मंगल गाई
यसुदा के खुल गए भाग वृज में लडुआ बटे।।
भर भर थाली सखियाँ लाई
यसुदा जी को देन बधाई
कोवे लाला की जय जय कार वृज में लडुआ बटे।।

व्रज मे है रही जय जय कार

व्रज मे है रही जय जय कार नन्द घर लाला जायो है
लाला जायो है नन्द घर लाला जायो है।
ग्वाल बाल सब हिलमिल गावें जूथ के जूथ नन्द घरआवें2
ब्रह्मानन्द समान आज सुख सबनें पायो है।।ब्रजमें।।
ब्रज चौरासी कोश में मैया धन्य कहे री जसुदा मैया
अस्सी साल की आयू में ऐसो लाला जायो है।।व्रज में।।
ब्रह्मा शिव सनकादिक आये सिद्ध मुनि सब देव सिधाये
धर ग्वालन को रूप सबहिं मिलि मंगल गायो है।।व्रज में।।
ऐसो अद्भुत सुत तौ काहू और न पायो है।।व्रज में।।

सुन ले दातिये मेरी बात फसी है

सुन ले दातिये मेरी बात फसी है
तेरी हंसी न अब मेरी हंसी है
दुनिया तो रूठी मुझसे क्यों तू भी हुई हरजाई
आश लगाई तेरी मैंने तू भी बनी पराई
आजा अब तो आजा माई–जानें कहाँ छुपी है
।। सुन ले।।
ना जानूं मैं सेवा पूजा न मैं भक्ति जानू
एक सहारा तेरा माई तुझको ही सब कुछ मानूं
तेरी मूरत देखी जबसे आंखों में तू बसी है
।। सुन ले ।।
ज्ञान सुरों का देना मुझको सुनले मेरी माई
ये छोटी सी लगन लगी है पूरी करदे माई
सातस्वरो का ज्ञान देगी मां–मन में बहुत खुसी है
।।सुन ले ।।
अब तो आओ मन्दिर से दौड़ी चली आओ माता
तेरा बेटा दर्शन को देखो मैया अकुलाता
भक्तों की ये अर्ज मानली–लगी अशुअन की झड़ीहै
।। सुन ले ।।

इक जोगी आयो री तेरे द्वार

इक जोगी आयो री तेरे द्वार दिखादे मुख लाल को
तेरे पलनें पालन हार दिखादे मुख लाल को –
ओरी मैया दिखादे..।।
लिये अँखियों में प्यास जोगी करे अरदास
बड़ी दूर से लेके आयो आश – ।
माई ऐसो संजोग न साथ दिखादे मुख लाल का ।।
मेरे नयना भये हैं निहाल, प्यासे नयना भये हैंनिहाल,
देख मुख लाल का
ओरी मैया निरख मुख श्याम का
रखले हीरे मोती तेरे ये पत्थर किस काम के मेरे
जोगी हो गया मलामाल निरख मुख श्याम का ।
तेरो भर्‌यो रहेगो भंडार निरख मुख श्याम का
ओरी मैया...।।

दुनिया काहे को बनाये राम ने

दुनिया काहे को बनाये राम ने
कोई ढूढ़ो मेरा दिल सामने
आकाश बनाया तूने पाताल भी बनाया
धरती बनाये राम ने ।।टेक ।।
आंधी को बनाया तूने
निरंजन को बनाये राम नें ।।टेक ।।
ब्रह्मा को बनाया तूने विष्णू को बनाया
शंकर को बनाये राम ने ।।टेक ।।
सूरज को बनाया तूने चाँद को बनाया
तारों को बनाये राम नें
।। दुनिया कहे को।।

जुग जुग जीवे री यशोदा मैया

(शिवागमन-व्रज)

जुग जुग जीवे री यशोदा मैया तेरो ललना
बड़भागी तू मात यशोदा ऐसो लाला जायो।
पूरण ब्रह्म जगत को स्वामी तैने गोद खिलायो।।
पुचकारी झुलावे पलना तेरो ललना।।जुग-जुग.।।
धन्य घड़ी जब होय यशोदा मैया कहकर बोले।
नूपुर बाँध दोऊ चरणन में घुटमन-घुटमन डोले।
पकड़े बाबा की अँगुलिया तेरो ललना।।जुग-जुग।।
जो मांगे सो लेजा बाबा भोजन हाँथ जुड़ाऊँ।
पर तेरा वेष देख डरेगा बालक नहीं दिखाऊँ।।
मेरो छोटो सो ललनवाँ झूले पलना ।।जुग-जुग.।।
माया काल डरे सब जाते सब भक्तन को हितकारी।
अपने लाल को मरम न जाने तू भोरी महतारी।।
जग में आयो तेरो ललना हाँ झूले पलना।।
जुग जुग जीवे री यशोदा मैया तेरो ललना

नाम करण

मै सुनि मथुरा से जो आयो लगन सोधि ज्योतिष सों।
चाहहिं तुमहि सुनायो ।।
संबत्सर ईश्वर को भादों नामहि कृष्ण धार्‌यो है ।
रोहिणि बुधा आठे अंधियारे हर्षण योग पर्‌यो है ।।
।।बाबा ।।
वृष है लगन उच्च को उडुपति तन को अति सुखकारी।
गल चतुरंग चलैं संग इनके होइहैं रसिक विहारी ।।
।।बाबा ।।
चौथी राश पेड़ के निर्मल महि मंडन को जीते ।
करिहैं नाश कंस मामा को निश्चय ही कछु दिन बीते
।। बाबा ।।
पंचम बुध कन्या के सोभित पुत्र बढ़ेंगें सोई।
छठये शुक्र तुला के शनिजित शत्रु बचे नहिं कोई ।।
।।बाबा ।।
नीच च युवती बहु भोगे सप्तम राहु पर्‌यो है ।।
।।बाबा ।।
नवनिधि जाके नाभि बसत है नीर वृहस्पति केरी ।
पृथिवी भार उतारे निश्चय यह मानो तुम मेरी ।।
।।बाबा ।।
ग्रह कछु परे जनम पत्री में डर बिन जाय हियो है ।
कंह लगि कहूं नन्द यामें चोरी में चित्त धियो है
।। बाबा ।।

वृज प्रसिद्धं नवनीत चौरं
गोपांगनानां चरस्थूल चौरं।
श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे
हे नाथ नारायण वासुदेव।।
आनीत जन्मार्जित पाप चौरं
चौराग्रगण्यं पुरुषं नमामि।। कृष्ण ।।
श्री राधिकाया हृदयसि चौरं
नवं बुधस्य मलिकान्ति चौरम् ।। श्रीकृष्ण ।।
पादाश्रितानां च सन्मस्त चौरं
चौंराग्रगण्यं पुरुषं नमामि ।। श्रीकृष्ण।।

छगन मगन मेरे लाल को

छगन मगन मेरे लाल को आजा रे निन्दिया आजा
चंचल मोहन श्याम के नैनन बीच समा
जप तप पूजा पाठ सों विधिना दियो मोहि लाल।।
सोजा कन्हैया लाड़ले मैया बजावे ताल।
कैसे सुलाऊँ लाला को धीरे धीरे लोरी गा।।छगन।।
सोवे कन्हैया पालना याकी है छवि अभिराम।
आँगन की शोभा मेरो मन मोहन घनश्याम।
आजारी निन्दिया लालको मैया रही तोकूँ बुला।छगन।

सोजा लाला सोजा

सोजा लाला सोजा 2
थपकी देके सुलाये लोरी तुझे सुनाऐ
ममता बावरी ममता बावरी।
तोहे बड़े होके करनें हैं बड़े बड़े काम,
इस जग से मिटाना है पापियों के नाम।
बल की आस लगाये तुझपे वारी जाये
ममता बावरी ममता बावरी ।।
एक मन चाहा वरदान है तू ,
मेरा नन्हा सा भगवान है तू।
सुख देखे सुख पाये फूली नहीं समाये,
ममता बावरी ममता बावरी।।

नाचे नन्दलाल

नाचे नन्दलाल नचावें हरि की मैया
मथुरा मे हरि जनम लियो है
गोकुल में पग धर्‌यो री कन्हैया ।।नाचे।।
रुनुक झुनुक पग नूपूर बाजे
ठुमुक-ठुमुक पग धरे री कन्हैया।।नाचे।।
धोती न बांधे लाला फेंटा न जामा न पहिरे
पीताम्बर को बड़ो री पहनैया।।नाचे।।
टोपी पहने लाला फेंटा न बांधे
मोर मुकुट को बड़ो री पहरैया।।नाचे।।
शाल न ओढ़े लाला दुशाला न ओढ़े
काली कमरिया को बड़ो री पहरैया।।नाचे।।
दूध न भावे याने दही न भावे
माखन मिश्री को बड़ो री खवैया।।नाचे।।
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवि
हंसि हंसि कण्ठ लगावे हरि की मैया।।नाचे।।

तेरे लाला ने माटी खाई

तेरे लाला ने माटी खाई यशोदा सुन माई।
अद्‌भुत खेल सखन संग खोलो
छोटो सो माटी को डेलो
तुरत श्याम मुख में मेलो
याने गटक गटक गटकाई।।यशेदा।।
माखन कूँ कबहूँ नाय नाटी
क्यो लाला तैने खाई माटी
धमकावै यशुदा लै सांटी
जाय नेक दया न आई।।यशोदा।।
ऐसो स्वाद नाय माखन में
नाय मिसरी में वा दाखन में
जो रस ब्रज रज के चाखन में
जाने भक्ति की मुक्ति कराई।यशोदा।।
मुखते माह उगरिया मेली
निकर परी माटी की डेली
भीर परी सखियन की भेली
जाय देखे लोग लुगाई।।यशोदा।।
मोहन को मुह फरवायो
तीन लोक कौ रूप दिखायो
जब विश्वास जसोदा आयो

ये तो पूरण ब्रह्म कन्हाई।।यशोदा।।

श्याम माखन चुराते चुराते

श्याम माखन चुराते चुराते
अब तो दिल भी चुराने लगे है ।
राधारानी को लेकर सवरिया
अब तो मधुवन में जाने लगेहै।।श्याम ।।
देवकी के गर्भ से जो जाये
माँ यशोदा के लाला कहाये ।
ग्वाल वालों के संग मे कन्हैया
अब तो गौव चराने लगे है ।।श्याम।।
मोह ब्रह्मा का जिसने घटाया
मान इन्द्र का जिसने मिटाया ।
स्वयं बनकर पुजारी कन्हैया
अब तो गिरवर पुजाने लगे है ।।श्याम।।
श्याम ने ऐसी वंशी बजाई
तान सखियों के दिल मे समाई ।
राधारानी को लेकर कन्हैया
राश मधुवन रचाने लगे हैं ।।श्याम।।
दीनबन्धु जमाने के दाता
संत भक्तों के हैं जो विधाता ।
दया लेकर शरण राधारानी की
उनका गुण गान गाने लगे है ।।श्याम।।

माखन की चोरी नन्दलाल करे

माखन की चोरी नन्दलाल करे
उन्हीं से राधारानी प्यार करे।
एक दिन गई थी पनिया भरन को
पनघट पे कान्हा तकरार करे।।
उन्ही से राधारानी प्यार करे।
एक दिन गई थी दहिया बेचनको।
मटकी से कान्हा रार करे।।
उन्हीं से राधारानी प्यार करे।
इक दिन गई थी यमुना नहाने।
मेरी चुनरी से कान्हा तकरार करे।
उन्हीं से राधारानी प्यार करे।

मोहन से दिल क्यों लगाया है

मोहन से दिल क्यों लगाया है
ये मै जानू या वो जाने
ये मै जानू या वो जाने ये मै जानू या वो जाने ।। छलिया।।
हर बात निराली है उसकी
हर बात में है इक टेढ़ा पन 2
टेढ़े पर दिल क्यों आया है ।।ये मैं।।
जितना दिल नें तुझे याद किया
उतना जग नें बदनाम किया
बदनामीका फल क्या पाया है।ये मैं।
मिलता भी है वो मिलता भी नहीं
नजरों से मेरे वो हटता नहीं
जाने कैसा जादू चलाया है ।। ये मैं।।

मै तो गोवर्धन को जाऊँ

मै तो गोवर्धन को जाऊँ मेरी वीर
नाय माने मेरो मनुआ ।
सात कोश की दै परकम्मा
मैं तो मानसि गंग नहाऊँ मेरी वीर ।।नाय।।
सात सेर की करूँ रे कढ़ैया
मै तो ब्राह्मण न्यौत जिमाऊँ मेरीवीर–नाय।।
एक रुपा की पाव जलेबी
मैं तो बैठ सड़क पे खाऊँ मेरी वीर–नाय।।
चम्पा जाय चमेली जाय
अरी मैं कैसे रह जाऊँ मेरी वीर–नाय।।
श्रीगिरिराज पे दूध चढ़ाऊँ
मै तो पेड़ा भोग लगाऊँ मेरी वीर–नाय।।
छटा तेरी.....

श्री गोवर्धन महराज

श्री गोवर्धन महराज तेरे माथे मुकुट विराज रह्यो
तेरे कानन कुण्डल सोह रहे, और भ्रकुटी बनी विशाल।।तेरे।।
तोपे पान चढ़े तोपे फूल चढ़े और चढ़े दूध की धार2।।तेरे।।
तेरे माथे बेदा रोरी को , तेरे ठोढ़ी पे हीरा लाल2।।तेरे।।
प्रभु सात कोस में रूप तेरो और संकट दूर करो मेरो।
तुम भक्तन के सिरताज तेरे माथे मुकुट विराज रह्यो।।

खुरचन है खीर मोहन

खुरचन है खीर मोमहन खीरसा और खुर्मी खीर,
खजला जलेबी कलाकन्द बालूसाही है।
मोहनथार मेवावाटी मठरी महसूर पाक,
केक रसगुल्ला संग रवड़ी भी सुहाई है।
भुजिया नमकीन सेब गठिया सकलपारे,
गुझिया समोसा पापड़ पकौड़ी बनाई है।
मधुप श्याम नन्द बाबा यशुदा सब सामग्री,
लेकर गिरिराज आज भोग में सजाई है।।

नन्द जी के लाल

नन्द जी के लाल सखी जग से नियारे हैं।
जग से नियारे वो तो सबके सहारे हैं।।
पूतना जो आई हरि जहर पिलाने को।
परम गति दे उसे पार उतारे हैं-नन्द।।
ऊखल संग मैया जब कान्हाजी को बाँध दीन्हो।
यमन-अर्जुन को हरि क्षण में उबारे हैं- नन्द।।
मैया डाँटे देख लल्ला माटी क्यों खाई रे।
तीन लोक देख मइया सुध-बुध हारे हैं -नन्द।।
अधासुर ने ग्वाल बाल जंगल में मार दीन्हे।
प्राण-दान दे गवाल अघासुर तारे हैं-नन्द।।
ब्रह्मा जी ने ग्वाल बाल गउओं संग हर लीने।
रूप अद्भभुत देख के तन-मन हारे हैं-नन्द।।
ब्रजपे जब भीड़ पड़ी गोवरधन उठाय लीन्हो।
इन्द्र का गुमान तोड़ भाग्य सँवारे हैं-नन्द।।
मधुबन में जब-जब बन्शी बजाये सखी।
सुध-बुध खो के मन मेरो मथ डारे हैं-नन्द।।
जलके भरन को जब जमा किनारे जाऊँ।
मान की गगरी तोड़ जीवन सँवारे हैं -नन्द।।
सनकादि ऋषि-मुनि भेद न पाया जिनका।
भक्त कहें प्राणधन जीवन-आधारे हैं-नन्द।।

हमारो कान्हा गोवर्धन गिरधारी

हमारो कान्हा गोवर्धन गिरधारी
कन्हैया निज भक्तन के ,
शीष निज छत्तर बनके ।
देखो आप करें रखवारी ।।हमारो कान्हा ।।
प्रलय के बादल बरसायले ,
अपनी सबरी शक्ति लगायले।
बाल न बांको होय वृज को जब तक वृज बिहारी।।
।। हमारो कान्हा ।।

हम तुमको मना लेंगे।

क्या रूठ गये मोहन हम तुमको मना लेंगे।
आहों में असर होगा घर बैठे बुला लेंगे।।

तुम कहते हो मोहन, मुझे कहाँ बिठाओगे।
तुम आओ तो मोहन पलकों में बिठा लेंगे।।

तुम कहते हो मोहन, हमें कहाँ बसाओगे।
एक बार चले आओ हृदय में बसा लेंगे।।

तुम कहते हो मोहन, हमें माखन प्यारा है।
तुम आओ तो माखन मिश्री भी खिला देंगे।।

तुम कहते हो मोहन, हमें गउएँ प्यारी हैं।
एक बार चले आओ गउँशाला बना देंगे।।

तुम हते हो मोहन, हमें राधा प्यारी है।
तुम आकर देखो तो वह बहन हमारी है।।

तुम कहते हो मोहन हमें भक्त पियारे हैं।
तुम आओ तो मोहन हम भक्त तुम्हारे हैं।।

तुम कहते हो मोहन हमें सत्संग प्यारा है।
एक बार चले आओ सत्संग ही तुम्हारा है।।

दर्शन दो साकार

मेरा छोटा सा संसार हरि
आ जाओ तुम एक बार हरि–2

लाखों को दरश दिखाया है
प्रभु मुझको क्यूँ तरसाया है
ये कैसी तुम्हारी माया है–2
नित बहती असुँअन धार हरि . . .

जब याद तुम्हारी आती है
तन मन की सुध बिसराती है
रह–रह के मुझे तड़पाती है–2
तन–मन–धन सब दूँ बार हरि . . .

मुझको बिछुड़े युग बीत गये
क्यों रूठ प्रभु मेरे मीत गये
मैं हार गया तुम जीत गये–2
अब दर्शन दो साकार हरि . . .

सुन बरसानें वाली गुलाम तेरो बनवारी

सुन बरसानें वाली गुलाम तेरो बनवारी
तेरी पयलिया मे बाजे मुरलिया
छम–छम नाचे गिरिधारी।।गुलाम.।।
चन्द्र की आनन पे बड़ी–बड़ी अँखिया
लट–लटके घुँघरारी।।गुलाम.।।
बड़ी–बड़ी अँखियन पे झीनो–झीनो कजरा
घायल कुञ्ज बिहारी।।गुलाम।।
वृन्दावन के राजा होकर
छाछ पे नाचे मुरारी।।गुलाम.।।
वृन्दावन की कुञ्ज गलिन में
रास रच्यो गिरिधारी।।गुलाम।।
कदम्ब की डारी पे झूला पड़यो है
झोटा देवें बिहारी।।गुलाम।।

भाग्यवान है कृष्णा

धन्य धन्य व्रजभूमि की तूने चरण चिन्ह जहँ डाले।
भाग्यवान है कृष्णा तेरे देश मे रहने वाले ।।
मै ब्रज को रसिया ब्रजवासी
मेरो मन कान्हा को दास आत्मा राधे की दासी ।।
हृदय वृन्दावन मे डोले
मेरी सांस सांस राधो कृष्णा राधे कृष्णा बोले ।।
मान ब्रज मे रह पाया है
चारो धामो मे इसी धाम को श्रेष्ठ बताया है।। मै ।।
तूने ही संसार को दिया प्रेम संदेस
रंग के तेरे प्रेम मे रंग गये देश विदेश
प्रेम की रीति सिखाई है
सारे नातों से ऊँची जग मे प्रेम सगाई है
ब्रज की बोली निठलोनी
ब्रजभूमि के जैसे भूमि जगत मे और नहीं होनी ।।मैं।।

तेरा ही आसरा है

सारे जहाँ के मालिक तेरा ही आसरा है।
राजी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रजा है।

हम क्या बतायें तुझको, सब कुछ तुझे खबर है
हर हाल में हमारी तेरी तरफ नजर है
किस्मत है वो हमारी जो तेरा फैंसला है।

हाथों को हम दुआ की खातिर में लायें कैसे
सजदें में तेरे आकर सर को झुकायें कैसे
मजबूरियाँ हमारी सब तू तो जानता है।

रोकर कटे या हँसकर कटती है जिन्दगानी
तू गम दे या खुशी दे सब तेरी मेहरबानी
तेरी खुशी समझकर सब गम भुला दिया है।

दुनिया बना के मालिक जाने कहाँ छिपा है
आता नहीं नजर तू बस एक ये गिला है
भेजा है इस जहाँ में जो तेरा शुक्रिया है।

हो गए भव से पार

हो गए भव से पार लेकर नाम तेरा
बालमीक अति दीन दुखी था
बुरे कर्म में सदा लीन था
करी रामायण तैयार लेकर नाम तेरा।।टेक।।
थे नल नल नील जति के बानर
राम नाम लिख दिया शिला पर
हो गई सेना पार लेकर नाम तेरा।।टेक।।
भरी सभा में द्रुपद दुलारी
कृष्ण द्वारिका नाथ पुकारी
बढ़ गया चीर अपार लेकर नाम तेरा।।टेक।।
मीरा गिरिधर नाम पुकारी
विष अमृत कर दिया मुरारी
नाच कूद कर तुम्हें दिखाई
लोक लाज सब दूर भगाई
खुल गए चारों द्वार लेकर नाम तेरा।।टेक।।
गज ने आधा नाम पुकारा
गरुण छोंड़ कर उसे उबारा
किया ग्राह संहार लेकर नाम तेरा।।टेक।।
जिनको स्वयं तार नहीं पाए
नाम लिए से मुक्ति पाए
महिमा नाम अपार लेकर नाम तेरा।।टेक।।
राम नाम को जो कोई गावे
अपने तीनों लोक बनावे
है जीवन का सार ले ले नाम तेरा।।टेक।।

ये तो प्रेम की बात है ऊधौ

ये तो प्रेम की बात है ऊधौ
बंदगी तेरे बस ही नहीं है ।
यहाँ सर दे के होते हैं सौदे
आशिकी इतनी सस्ती नहीं है।। ए तो।।
प्रेम वालों ने कब वक्त पूंछा
उनकी पूजा में सुनले रे मौ ।
यहाँ घर घर में होती है पूजा
सर झुकाने की फुरसत नहीं है।।एतो।।
जो असल में हैं मस्ती में डूबे
उन्हें क्या परवाह जिन्दगी की।
जो उतरती है चढ़ती है भक्ती
वो हकीकत में भक्ती नहींहै।। ए तो ।।
जिसकी नजरों में हैं श्याम प्यारे
वो तो रहते हैं जग से निराले ।
जिनके नजरों में मोहन समाये
वो नजर फिर तरसती नहीं है ।। ए तो।।

ऊधौ मन न भये दस बीस

ऊधौ मन न भये दस बीस
एक हुतो सो गयो श्याम संग अब को आराधे ईश ।।
इन्द्रिय सिथिल भई केशव बिनु ज्यो देही बिनु शीष ।
आशा लागि रहति तन स्वासा जबहि कोटि बरीश ।।
तुम तो सखा स्याम सुन्दर के सकल जोग के ईश ।
सूर हमारे नन्द के नन्दन और नही जगदीश ।।
ऊधौ मन न भये दस बीस

मिलादो श्याम से ऊधौ

मिलादो श्याम से ऊधौ तेरा गुण हम भी गाएँगे
गोकुल को छोड़ जबसे गए वापस नहीं आए।
खता क्या हो गई मुझसे अरज अपनी सुनाएँगे।।
प्रीति हमसे लगाकर के बिसारा नन्द नन्दन ने।
चरण में शीष धर-धर के हम उनको मनाएँगे।।
फिर कभी जो आए गोकुल में हमें दर्शन दिला देना।
ब्रह्मानन्द फिर उनको न हम दिल से भुलाएँगे।।
मिलादो श्याम से ऊधौ तेरा गुण हम भी गाएँगे

मोहि आन मिलो घनश्याम

मोहि आन मिलो घनश्याम बहुत दिन बीत गए।।
राधा की अँखियन के तारे
मेरे भी बन जाओ सहारे।।
ओ भक्तों के भगवान बहुत दिन बीत गए।।टेक।।
मुरली वाले मुरली बजाजा।
सोए हुए मेरे भाग्य जगाजा।।
ओ मीरा के घनश्याम बहुत दिन बीत गए।।टेक।।
नरसी भगतकी हुण्डी सिकारी।
सांवल साह बनि आये मुरारी।।
ओ नरसी के सुन्दर श्याम बहुत दिन बीत गए।।टेक।।
मन मन्दिर में रास रचाजा।
रूप साँवला दरस दिखाजा।।
जीवन की हो गई शाम बहुत दिन बीत गए।।टेक।।

कन्हैया कन्हैया

कन्हैया कन्हैया पुकारा करेंगे
लताओं में व्रज की गुजारा करेंगे।
कहीं तो मिलेंगे वो बाँके बिहारी।
उनके चरणों में चित को लगाया करेंगे।
बनायेंगे हृदय को हम प्रेम मन्दिर।
उन्हीं से सदा लौ लगाया रेंगे।।कन्हैया।।
उन्हे प्रेम डोरी से हम बांध लेंगे।
तो फिर कैसे वो भाग जाया करेंगे ।कन्हैया।

मेरे उठे विरह की पीर

मेरे उठे विरह की पीर सखी वृन्दावन जाऊँगी।
बाजे मुरली यमुना तीर सखी वृन्दावन जाऊँगी।।
श्याम सलोनी सूरत की दीवानी हो गई।
मै कैसे धारूँ धीर सखी वृन्दावन जाऊँगी।।
मैने छोंड़ दिया सब भोजन पानी श्याम की याद में।
मेरे नैनन बररसे नीर सखी वृन्दावन जाऊँगी।।
इस दुनिया के सब रिस्ते नाते सबही छोंड़ दिए।
तोहे कैसे दिखाऊँ दिल चीर सखी वृन्दावन जाऊँगी।।
नैन लड़े गिरधर से मै तो पागल कर डारी।
दुनिया से भयो अधीर सखी वृन्दावन जाऊँगी।।

सपनों में आने श्याम

सपनों में आने वाले सामने तो आजा ।
कैसी तेरी सावली सूरत नेक तो दिखाजा।।
जीवन की नैया का तू ही किनारा ।
मुझे तरसाने वाले दुनिया भुलाजा । कैसी।
तेरे बिना ये लागे संसार सूना ।
दिल ये बना है गम का नमूना ।।
दिल मे तो आने वाले पागल बनाजा।।कैसी
तेरे बिना ये हुआ यह हाल मेरा ।
दिलवर तू मेरा दीवाना मैं तेरा 2।।
मुझको रुलाने वाले 2गले से लगाजा।कैसी

मैं तो गोविन्द के गुण गाना ।

मैं तो गोविन्द के गुण गाना ।
राजा रुठे नगरी राखे
हरि रुठे कहँ जाना ।।मैं तो।।
राणा भेजा जहर पिलाना–2
अमृत कर पीजाना।।मैतो।।
डिबिया में भेजा जो भुजग्रम–2
शालिग्राम कर जाना।।मैंतो।।
मीरा तो प्रभु प्रेम दिवानी
सावरिया वर पाना।।मैं तो।।

वृज के नन्द लाला

वृज के नन्द लाला राधा जी के सांवरिया।
सब दुख दूर हुए जब तेरा नाम लिया।।
मीरा पुकारे तुम्हे गिरधार गोपाला ।
ढल गया अमृत में विष का भरा प्याला।
कौन मिटाए उसे जिसे तूने राखलिया–सब
जब तेरे गोकुल मे आई विपदा भारी
एक इशारे पे टारी विपदा भारी।
मुड़गया गोवर्धन जिसे तूने उठाही लिया ।सब
नैनो मे श्याम बसे मन मे बनवारी
सुध बिसराय गई मुरली की धुन प्यारी
मेरे मन मंदिर मे रास रचाओ रसिया।।सब।।
देख रहे हो तुम मेरे दुखड़े सारे
अब दर्शन दे दो मेरी आंखों के तारे
अधर पे मुरली है कांधे पे काँवरिया।।सब।।

अपनी वाणीं में अमृत घोल

अपनी वाणीं में अमृत घोल रसना राधे राधे बोल ।
ये बोल बड़े अनमोल रसना राधे राधे बोल–रसना ।।
राधा जी बरसाने वाली राधा जी वृषभानु दुलारी ।
दो अक्षर आधार जगत के ये अक्षर अनमोल–रसना ।।
राधा जी महाराश रचावे राधा जी नन्दलाल नचावे ।
इसछवि को भरि के नयनन में अन्तर के पटखोल– रसना।।
बिन राधा नहीं सजे बिहारी बिन राधा नहीं मिले बनवारी।
इनके चरण पकड़ ले नादां भटक न दर दर डोल–रसना।।

हमरो प्रणाम प्रणाम बाँके बिहारी को

हमरो प्रणाम प्रणाम बाँके बिहारी को
बाँके बिहारी को कुँज बिहारी को।।
मोर मुकुट माथे तिलक विराजे ।
कुण्डल अलका कारी को ।।बाँके।।
अधर मधुर पर वंशी बजाये ।
रीझे रिझावे राधा प्यारी को बाँके ।।
यह छवि देख मगन भई मीरा ।
मोहन गिरवर धारी को ।।बाँके।।

जरा मुरली की तान सुनादे

जरा मुरली की तान सुनादे तुझे हम माखन देंगी।
जब से कान्हा सुनी बैरन मुरलिया
सुध बुध भूली हो गई बावरिया
जरा फिर से वो तान सुनादे।।तुझे।।
ओ तेरे लिये कान्हा सब जग छोंड़ा
वृन्दावन से नाता जोड़ा
जरा आकर दरश दिखा दे।।तुझे।।
तेरी मुरलिया पे सब जग नाचे
गोपियों के तुम छांछ पे नाचे
हो जरा नाचके हमको दिखादे।।तुझे।

मीरा दीवानी हो गई

मीरा दीवानी हो गई रे मीरा मस्तानी हो गई
श्याम रंग में रंगी चुनरिया ओऽओऽओ, आऽआऽआ
।। मीरा दीवानी ।।
राजा जी की रजधानी छोड़ी लोक लाज सब छोड़ी
रंग के श्याम रंग में मीरा जी ने ओढ़ी
लोक लाज की नहीं खवरिया ओऽओऽओ,आऽआऽआ
।। मीरा दीवानी ।।
पैरों में तो घुंघरू बांध के वो नाचे झूमे गाये
वही विरह में श्याम दीवानी और न कोई भाये
वृन्दावन की गही डगरिया ओऽओऽओ, आऽआऽआ
।। मीरा दीवानी ।।

एक दिन वो भोला भण्डारी

एक दिन वो भोला भण्डारी बनके व्रज की नारी वृन्दावन आगये हैं।
पारवती जी मना के हारी ना माने त्रिपुरारी वृन्दावन आ गये हैं ।।

हे मेरी गौरा रानी मैं भी चलूंगा तेरे साथ में
राधा संग मोहन नाचे मैं भी नचूंगा तेरे साथ में ।

व्रज मे राश रचा है भारी हमे दिखाओ प्यारी-वृन्दावन.।।1।।

हे मेरे भोले शंकर कैसे ले जाऊँ तोहे साथ में
मोहन के सिवा कोई पुरुष न जाए इस राश में ।

हंसी करेंगी व्रज की नारी मानो बात हमारी वृन्दावन आ गये हैं।।2।।

ऐसा सजादो गौरा कोई न जाने इस राज को
मैं हूँ सहेली तेरी ऐसा बताना व्रजराज को ।।

लगा के बिन्दिया पहन के साड़ी चाल चले मतवारी-वृन्दावन.।।3।।

हंस के सती ने कहा वारी मैं जाऊँ इस रूप पे ।
एक दिन तुम्हारे लिये आये मुरारी इस रूप पे ।।

नारी रूप बनाया हरि ने आज तुम्हारी वारी-वृन्दावन.।।4।।

देखा प्रभू ने जब समझ गये सब राज को ।
ऐसी बजाई वंशी सुध बुध भूले भेलानाथ जी ।।

सिर से खिसक गई जब साड़ी मुस्काए बनवारी-वृन्दावन.।।5।।

मुरली बजा के मोहना

मुरली बजा के मोहना क्यों कर लिया किनारा
अपनो से हाय कैसा व्यवहार है तुम्हारा।।मुरली।।
ढूँढ़ा गली गली में खोजा डगर डगर में,
मन में यही लगन हे, दर्शन मिले तुम्हारा।।मुरली।।
मधुवन तुम्ही बताओ, मोहन कहाँ गए है?
कैसे झुलस गयया है, कोमल बदन तुम्हारा।।मुरली।।
यमुना तुम्हीं बताओ छलिया कहाँ गया है।
तुम भी छली गई हो, कहती है नील धारा।।मुरली।।
दुनियाँ कहे दिवाना, पागल कहे जमाना।
पर तुमको भूल जाना, हमको नहीं गवारा।।मुरली।।
राधा तुम्हीं बताओ, गोविन्द कहाँ छिपे हैं ?
तुम भी द्रवित हुई हो, कहती है अश्रु धारा।।मुरली।।
भक्तो तुम्हीं बताओ, भगवन कहाँ गए हैं ?
अपना ही दिल टटोलो, हर दिल में वो बसा है।।।मुरली।।

ऐसो राया रच्यो वृन्दावन

ऐसो राया रच्यो वृन्दावन है रही पायल की झंकार
है रही पायल की झंकार है रही पायल की झंकार
घुँघरू खूब छमा छम बाजे बजने बिछुआ बहुतहिं बाजे
रवा कोंधनी केहू बाजे
अंग अंग मे गहना बाजे बाजे चुड़ियन की झनकार।।ऐसो।।
बाजे भांति भांति के बाजे झांझ पखावज दुन्दुभि बाजे
सारंगी और मुह पर बाजे
बंशी बाजे मधुर मधुर बाजे बीना की झनकार ।।ऐसो।।
राध मोहन दे गल बइयाँ नाचे संग संग ले थिरकइयाँ
ब्यार चले शीतल सुखदइयाँ
जामा पटुका लहंगा फरिया करें सनन सनकार ।।ऐसो।।

जरी की पगड़ी बांधे

जरी की पगड़ी बांधे सुन्दर आंखो वाला
कितना सुन्दर लागे बिहारी कितना लागे प्यारा ।।
कानों कुण्डल साजे सिर मोर मुकुट विराजे ।
सखियाँ पगली होती जब जब कान्हा ही मुरलीबाजे।।
ये चन्दा ये सांवरा ये तारे ग्वाल वाला ।।कितना ।।
लट घुँघराले बाल तेरे काले काले गाल
सुन्दर श्याम सलोना तेरी टेढ़ी मेढ़ी चाल
हवा में सर सर करता तेरा पीताम्बर मतवाला।।कितना।।
जब तू वंशी बजाये तो मोर भी नाच दिखाए ।
यमुना से नहरे उठती और कोयल कू कू गाए ।।
हाथ में कंगन पहने और गल बैजन्ती माला।। कितना

मुझे लगी श्याम संग प्रीत

मुझे लगी श्याम संग प्रीत ये दुनिया क्या जाने।
मुझे मिल गया मन का मीत दुनिया क्या जाने।।
छवि लखी है मैने श्याम की जब से।
भई बाबरी मैं श्याम पे तबसे
बाँधी प्रेम की डोर मोहन से
नाता तोड़ा मैने जगसे
ये कैसी पागल प्रत।।दुनिया.।।
मोहन की सुन्दर सूरतिया
मन में बस गई मोहनि मूरतिया
लोग कहें मैं भई बावरिया
जब से ओढ़ी श्याम चुनरिया
मैने छोड़ी जग की रीत।।ये दुनिया।।
हरदम अब तो रहूँ मस्तानी
लोक लाज की रीत भुलानी
रूप रास अंग-अंग में समानी
ढूँढ़त-ढूँढ़त रहूँ भुलानी
मै गाऊँ खुसी के गीत।।ये दुनिया।।

एहि मुरारे कुञ्जविहारे

एहि मुरारे कुञ्जविहारे एहि प्रणतजनबन्धो
हे माधव मधुमथन वरेण्य केशव करुणासिन्धो
रासनिकुञ्जे गुञ्जति नियतं भ्रमरशतं किलकान्त
एहि निभृतपथपान्थ ।
त्वामिहि याचे दर्शनदानं हे मधुसूदन शान्त ।।१।।
शून्यं कुसुमासनमिह कुञ्जे शून्यः केलिकदम्बः
अदीनःकेकिकदम्बः ।
मृदुकलनादं किल सविषादं रोदिति यमुना स्वम्भः ।।२।।
नवनीरजधरस्यामलसुन्दर चन्द्रकुसुमरुचिवेश
गोपीगण हृदयेश ।
गोवर्द्धनधर वृन्दावनचर वंशीधर परमेश ।।३।।
राधारञ्जन कंसनिषूदन प्रणतिस्तावक चरणे
निखिलनिराश्रयशरणे ।
एहि जनार्दन पीताम्बरधर कुञ्जे मन्थर पवने ।।४।।

।। इति श्रीगोपिकाविरहगीतं समाप्तम् ।।

मैने मेहदी लगाई रे कृष्ण नाम की

मैने मेहदी लगाई रे कृष्ण नाम की
मैने बिंदिया सजाई रे कृष्ण नाम की
मेरी चुड़ियों पे कृष्ण मेरी चुनरी पे कृष्ण
मैने नथनी सजाई रे कृष्ण नाम की।।टेक।।
मेरे नयनों में गोकुल और वृन्दावन
मेरे प्राणों में मोहन मन भावन
मेरे होठो पे कृष्ण मेरे हृदय में कृष्ण
मैने ज्योती जलाई रे कृष्ण नाम की।।टेक।।
अब छाया है कृष्ण अंग-अंग में
मेरा तन मन रंगा है उसी रंग में
मेरा प्रीतम है कृष्ण मेरा जीवन ही कृष्ण
मैने माला सजाई रे कृष्ण नाम की।।टेक।।

आओ मेरी सखियो मुझे मेहदी लगा दो

आओ मेरी सखियो मुझे मेहदी लगा दो
मेहदी लगादो मुझे ऐसी सजादो
मुझे श्यामसुन्दर की दुल्हन बनादो
सत्संग मे मेरी बात चलाई
सतगुरु ने मेरी कीन्ही सगाई
उनको बुलाके हथ लेवा तो करादो ।।मुझे।।
ऐसी पहनू चूड़ी जो कबहूँ न टूटे
ऐसा बरूँ दूल्हा जो कबहूँ न छूटे
अटल सुहाग की बिन्दिया लगादो ।।मुझे।।
ऐसी ओढ़ू चूनर जो रंग नहीं छूटे
प्रीति का धागा कबहूँ न टूटे
आज मेरी मोतियों से मांग भरादो।। मुझे।।
भक्ति का सुरमा मैं आंख मे लगाऊँगी
दुनिया से नाता तोड़ उन्हीं की हो जाऊँगी
सत्गुरु बुलाके मेरे फेरे तो पड़वादो।।मुझे ।।
बांध पग घुंघरू मैं उनको रिझाऊँगी
लेके इक तारा मैं श्याम श्याम गाऊँगी
सत्गुरु बुलाके डोली बिदा तो करादो।।मुझे।।

कुछ न बिगड़ेगा तुम्हारा

कुछ न बिगड़ेगा तुम्हारा गुरु शरण जाने के बाद
हर खुसी मिल जायगी चरणों में झुक जानें के बाद।।
प्रेम के मंजिल के राही कष्ट पाते हैं जरूर
बीज मिलता है सदा मिट्टी में मिल जानें के बाद।।कुछ।।
फूल से जाकर के पूंछो छाई है कितनी बहार
रात भर कांटो पे सोया डाल पर आने के बाद।।कुछ।।
देख कर काली निशा को हे भँवर मत हो निराश
बंद कलियाँ फिर खिलेंगी रात ढल जाने के बाद।।कुछ।।
प्रेम कर निष्काम निर्मल नाम ले घनश्याम का
सूखी बगिया फिर खिलेंगी ऋतुबदल जाने केबाद–कुछ।

भज कृष्ण कन्हैया

पार करेंगे नैया भज कृष्ण कन्हैया
बाल कृष्ण गोपाल हमारो वृजवासिन को प्राण पियारो
नन्द महर की छैया भज कृष्ण कन्हैया ।।
ग्वाल वाल संग धेनु चरावै लूट लूट दधि माखन खावै
माखन चोर कन्हैया ।। भज ।।
गोपिन के संग राश रचायो कामदेव याने मार भगायो
कालिय नाग नथैया ।। भज ।।
भक्त सुदामा चावल लाये प्रेम सहित प्रभु भोग लगाये
कह कर भैया भैया ।। भज ।।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर सूरदास के नटवर नागर
घट घट वास करैया ।। भज ।।

मागा है मैने श्याम से

मागा है मैने श्याम से वरदान एक ही
तेरी कृपा बनी रहे जब तक है जिन्दगी।।
जिस पर प्रभु का हाथ था वो पार हो गया।
जो भी शरण में आ गया उद्धार हो गया।
जिसका भरोसा श्याम पर डूबा कभी नहीं।।तेरी.।।
कोई समझ सका नहीं माया बड़ी अजीब।
जिसने प्रभु को पा लिया वो ही है खुस नसीब।
जिस कि इजाजत के बिना पत्त हिले नहीं।।तेरी।।
ऐसे दयालु श्याम से रिस्ता बनाइए।
मिलता रहेगा आपको जो कुछ भी चाहिए।
ऐसा करिश्मा होगा जो हुआ कभी नहीं।।तेरी.।।
कहते हैं लोग जिन्दगी किस्मत की बात है।
किस्मत बनाना भी मगर उसके ही हाथ है।
करलो यकीन अब मेरा ज्यादा समय नहीं।।तेरी.।।

सुदामा मंदिर देख डरे

सुदामा मन्दिर देख डरे
कहाँ गई मेरी राम झोपड़िया कौन नृपति उतरे।
अरे कौन नृपति उतरे ।।
कंचन महल छिनाय लियो मेरा झूपा अलग डरे ।
सुदामा मन्दिर देख डरे ।।
इधर उधर जीवत पण्डित मन मे सोच करे
खड़ी झरोखे पंडितायन जी आवो जी अब तो घरे।।
सुदामा मन्दिर देख डरे ।।
पहली पोल मधुमाते हस्ती दूजी तुरत करे
तीजी पोल विश्वकर्मा बैठे खंभा रतन जड़े ।।
सुदामा मन्दिर देख डरे ।।
चार पदारथ रचे भवन में दीनानाथ हरे ।
सूरदास प्रभु तम्हरे भजन से दुख दारिद्र टरे ।।
सुदामा मन्दिर देख डरे ।।

पद–

ऐसे विहाल विवाइन सो पग कंटक जान लगे पुनि जोई
हाय महा दु:ख पायो सखा तुम आये इतै न कितै दिन खोए।
देखि सुदामा की दीन दशा करुणा करके करुणानिधि रोये।
पानी परात को हाँथ छुओ नहि नैनन के जल सों पग धोये

न स्वर है न सरगम है

न स्वर है न सरगम है न लय है तराना है।
बजरंगी के चरणों में इक फूल चढ़ाना है।।1।।
तुम बाल समय मे प्रभु सूरजको निगल डाले।
अभिमानी सुरपति के सब दर्प मसल डाले।।
बजरंग हुये जब से संसार ये जाना है।।2।।
सब दुर्ग ढहा करके लंका को जलाये तुम।
सीता की खबर लाये लक्ष्मणको बचाये तुम।
प्रिय भरत सरिस तुमको श्रीराम ने माना है।।3।।
जब राम नाम तुमने पाया न नगीने मे।
तुम चीर दिये सीना सियराम थे सीने मे।।
विस्मित जग ने देखा कपि रामदिवाना है।।4।।
हे अजर अमर स्वामी तुम हो अन्तरयामी।
ये दीन हीन प्यारे अज्ञानी अभिमानी।।
जो तुमने नजर फेरी फिर कौन ठिकाना है।।5।।

मीठे रस से भर्‌यो री राधारानी लागे

मीठे रस से भर्‌यो री राधारानी लागे महारानी लागे
मन कारो कारो जमुना जी को पानी लागे।।
यमुना जी तो सांवर सांवर राधा गोरी गोरी
वृन्दावन में धूम मचावे बरसाने की छोरी
वृजधाम राधाजू की रजधानी लागे रजधानी लागे।।मन।।
कान्हा निज मुरली में टेरे सुमिरे बारम्बार
कोटिन रूप धरे नन्द नन्दन तऊ न पावे पार
रूप रंग की छबीली पटरानी लागे पटरानी लागे।।मन।।
न भावे मन माखन मिश्री अब न कोई मिठाई
म्हारी जी बरियाने भावे राधा नाम मलाई
वृषभान की लली तो गुड़धानी लागे गुड़धानी लागे।।मन।।
राधा राधा नाम रटत हैं जो नर आठो याम
तिनकी बाधा दूर करत है राधा राधा नाम
राधा नाम मे सफल जिन्दगानी लागे जिन्दगानी।।मन.।।

जीवन है तेरे हवाले ओ मुरली वाले

जीवन है तेरे हवाले ओ मुरली वाले
अपने भी तो हुए नहीं अपनें
तू ही अपना बनाले ओ मुरली वाले।।
तेरे हांथ की हम कठ पुतली
चाहे जैसा नचाले ओ मुरली वाले ।।
अब नहिं रहना इस दुनिया
वृन्दावन मे बसालेओ मुरली वाले ।।

हरि भजन बिना विश्राम नहीं

हरि भजन बिना विश्राम नहीं
श्रीराम बिना आराम नहीं
गेविन्द बिना सुख शान्ति नहीं
श्री कृष्ण बिना मन शान्ति नहीं
हरि भजन बिना विश्राम नहीं ।
श्रीमन्नारायण नारायण नारायण।।

भाव का भूखा हूँ मैं

भाव का भूखा हूँ मैं और भाव ही इक सार है।
भाव से मुझको भजे तो भव से बेड़ा पार है।।
अन्न, धन और वस्त्राऽभूषण कुछ न मुझको चाहिए।
आप हो जाएँ मेरे बस यही मेरा सत्कार है।।भाव..।।
भाव बिन कुछ भी वो देवे मैं कभी लेता नहीं।
भाव से एक फूल भी दे तो मुझे स्वीकार है।।भाव।।
भाव बिन सूनी पुकारें मैं कभी सुनता नहीं।
भाव पूरित टेर ही करती मुझे लाचार है।।भाव..।।
जो मुझ ही में भाव रखकर लेता है मेरी शरण।
उसके और मेरे हृदय का एक रहता तार है।।भाव.।।
भाव जिस जनके नहीं उसकी मुझे चिन्ता नहीं।
भाव वाले भक्त का भरपूर मुझ पर भार है।।भाव..।।
बाँध लेते भक्त मुझको प्रेम की जंजीर में।
इसलिए इस भूमि पर होता मेरा अवतार है।।भाव..।।

इदं अहं का भेद

इदं अहं का भेद कोइ कोई जाने रे
इदं दृश्य परिवर्तन शीला अहं इदं की देखो लीला
अहं अनन्त अखेद्य कोइ कोई जाने रे ।।इदं अहं।।
अहं स्वयं साक्षी अविनाशी दृष्टा चेतन सुख की राशी
गावे गीता बेद कोइ कोई जाने रे ।।इदं अहं।।
यह रहस्य कोइ बिरला जाने भिक्षु यती यह भेद बिछाने
जना द्वैत अभेद कोइ कोई जाने रे ।।इदं अहं।।

कोई कहे गोविन्द

कोई कहे गोविन्द कोई गोपाला
मैं तो कहूँ साँवरिया बाँसुरी वाला।।
राधा ने श्याम कहा मीरा ने गिरिधर
कृष्णा ने कृष्ण कहा कुब्जा ने नटवर
ग्वालों ने तुमको पुकारा गोपाला ।।मै तो।।
मैया तो कहती है सुनलो कन्हैया
घनश्याम कहते हैं बलराम भैया
सूरा की आँखों के तुम हो उजाला ।।मै तो।।
भीष्म जी के बनवारी अर्जुन के मोहन
छलिया भी कहकर बोला दुर्योधन
कंस तो कहता है जलकर के काला।।मै तौ।।
अच्युत युधिष्ठिर के ऊधव के माधव
भक्तों के भगवान संतो के केशव
ग्वालिनियाँ तुमको पुकारे नन्दलाला।।मै तो।।

राधे तेरे चरणों की गर धूल जो मिल जाए

राधे तेरे चरणों की गर धूल जो मिल जाए।
सच कहता हूँ मेरी तकदीर बदल जाए।।टेक।।
सुनते हैं तेरी रहमत दिन रात बरसती है।
इक बूँद जो मिल जाए दिल की कलि खिल जाए।टेक।।
ये मन बड़ा चंचल है कैसे तेरा भजन करूँ।
जितना इसे समझाऊँ उतना ही मचल जाए।।टेक।।
नजरों से गिराना न चाहे जितनी सजा देना।
नजरों से जो गिर जाए मुस्किल ही सम्हल पाए।टेक।।
राधे मेरे जीवन की बस एक तमन्ना है।
तुम सामने हो मेरे मेरा दम ही निकल जाए।।टेक।।

मन उस दिन की सोच

मन उस दिन की सोच काल जब आयेगा2
रे मतवाले मूढ़ संग क्या जायेगा 2
श्वाँसा के आने जाने का क्रम जब टूटेगा2
सौ बरसों मे जोड़ा जो वो छण में छूटेगा।।
बोल तू क्या कर पाएगा–रे मत. ।।
हुआ सभी के संग तेरे भी होएगा2
जग न सकेगा कभी नींद तू ऐसी सोएगा
तुझे संसार जगायेगा–रे मत.।।
कर न सकेगा कभी तू पूरी मन की इच्छा को
कर ले प्रभू का भजन
मान सद्गुरु की शिक्षा को2
नहीं तो पछतायेगा–रे मत.।।
सतसंगति में बैठ कुसंगति से तू हट ले रे
ब्रह्मानन्द राम नाम तू रट ले रे 2
तुरत भव रोग मिटायेगा–रे मत

मोटे –मोटे नैनन के तू

ओ2ओ2 ओ मोटे 2नैनन के तू हाय मीठे2बैनन के तू।
सॉवरी सलोनी सूरत के तू हाय प्यारी2मूरत के तू(2)।।
कजरारे मोटे2 तेरे नैन बांकेबिहारी कजरारे मोटे2तेरे नैन।
हो नजर न लग जाय हाय3।।
ओ काजल की कोरें हाय3 मेरा जिगर मरोरैं हाय3।
हो रंगरस में घोरै हाय3 बलिहारी रे कजरारे मोटे2तेरे नैन।।नजर।।
हो तेरे मुकुट की लटकन हाय3 अधारन की मुस्कन हाय3।
ग्रीवा की मटकन हाय3मै तो मारी रे कजरारे मोटे2तेरे नैन।।नजर।।
हो तेरी प्रीत है टेढ़ी हाय3हो तेरी मीत है टेढ़ी हाय3
हो तेरी प्रीत है टेढ़ी हाय3
मै तो हारी रे कजरारे मोटे2 तेरे नैन।।नजर।।
आंखों का काजल हाय3तेरी नजर से घायल हाय3।
तेरे प्यार में पागल हाय3कर डारी रे कजरारे मोटे2तेरे नैन।।नजर।।

अब सौंप दिया इस जीवन का

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में।।
मेरा निश्चय बस एक यही इक बार तुम्हे पा जाऊँ मैं
अर्पण करदूँ दुनिया भर का सब प्यार तुम्हारे हाथों में।।अब।।
जो जग में रहू तो प्से रहूँ ज्यों जल में कमल का फूल रहे।
मेरे सब गुण दोव समर्पित हों भगवान तुम्हारे चरणो में।।अब।।
यदि मानुष का मुझे जनम मिले तो तब चरणो का पुजारी बनूँ।
इस पूजक के इकइक रग का करतार तुम्हारे चरणो में।अब।।
जब जब संसार का कैदी बनूँ निष्काम भाव से कर्म करूँ
फिर अन्त समय में प्राण तजूँ साकार तुम्हारे चरणो में।।अब।।
मुझमे तुझमे बस भेद यही मै नर हूँ तुम नारायण हो ।
मै हूँ संसार के हाथों मे संसार तुम्हारे हाथों में।।अब।।
अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों मे।।

पुकारूँ जब तक है प्राण मेरा

पुकारूँ जब तक है प्राण मेरा।
नमामि शंकर नमामि शंकर।।
उठे यही कह जगत से डेरा।।नमामि शंकर।।
अलख अगोचर अनन्त चारी।।नमामि।।
दया के सागर दया अवतारी
नमामि शंकर नमामि शंकर
त्रिताप हरता त्रिकाल ज्ञाता
त्रिदोष नाशक त्रिलोक त्राता
त्रिपुण्डधारी-त्रिशूल धारी
नमामि शंकर नमामि शंकर
जटाओं में सोहे तेरे गंगधारा
ललाट पे बाल इन्दु है प्यारा
गले में मुण्डों की माल प्यारी
नमामि शंकर नमामि शंकर
तुम्हीं विधाता हो सृष्टिकर्ता
तुम्हीं हो पालक जगत के त्राता
तुम्हीं महाकाल नाशकारी,
नमामि शंकर नमामि शंकर
कृपा यह करूणानिधान करिये
विशुद्ध हरि-भक्ति दान करिये
धनी हो तुम और मैं भिखारी
नमामि शंकर नमामि शंकर

रघुकुल की शक्ति

रघुकुल की शक्ति
रघुकुल की शक्ति तुम्हीं तो हो
हे सीते शक्ति प्रणाम तुम्हें
अनुशक्ति, विचरक्ति तुम्हीं तो हो
हे सीते शक्ति प्रणाम तुम्हें
इस पृथ्वी तल की हरियाली–
उस नभ मण्डल की उजियाली
सबकी अभिव्यक्ति तुम्हीं तो हो–
हे सीते शक्ति प्रणाम तुम्हें
जो निष्क्रि और निरंजन है
निर्मल निर्गुण नारायण है
उनकी आसक्ति तुम्हीं तो हो
हे सोते शक्ति प्रणाम तुम्हें
सत का जिसमें भण्डारे सदा
जय का जिसमें आगार सदा
वह विस्तृत व्यक्ति तुम्हीं तो हो
हे सीते शक्ति प्रणाम तुम्हें
सब भांति तुम्हीं सुख करना हो
मोहन की जीवन जननी हो
मति, गति, रति भक्ति तुम्हीं तो हो
हे सीते शक्ति प्रणाम तुम्हें

सीताराम सीताराम

सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम
सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम
यहनाम बनाया प्रथम पूज्य गणपतिजी को पल में।
मिल गया यही अवलम्बनाम शबरी को जंगल में।।
लाखों का बेड़ा पार किया पहुँचाया हरि के धाम।।
सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम
ब्रह्मा जी के चारों बेदो से यह नाम निकलता है।
शिवजी के मानस मन्दिर में यह दीपक जलता है।।
नारद की बीणा से निकलता है यह पूरण नाम।।
सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम
बजरंग बली के बल में इनकी महिमा भारी है।
ध्रुव और विभीषण ने यह पाई बूटी प्यारी है।।
प्रह्लाद इसी को रटते थे निसिवासर आठों याम
सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम

गीता ज्ञान

है जीव मरने मारने वाला यही जो मानते।
यह मारता मरता नहीं दोनों न वे जानते।।

यह याद रख अविनाशी है जिसने किया जग व्याप्त है।
अविनाशी का नाशक नहीं कोई कहीं प्रयाप्त है।।

जैसे पुराने त्याग कर नए वस्त्र नव बदलें सभी।
यों जीर्ण तन को त्याग नूतन देह धरता जीव भी।।

आत्मा न कटता शस्त्र से है, आग से जलता नहीं।
सूखे न आत्मा वायु से, जल से कभी गलता नहीं।।

इन्द्रिय पहुंच से है परे, मन चिन्तना से दूर है।
अविकार इसके जान दु:ख में व्यर्थ रहना चूर है।।

अधिकार केवल कर्म करने का, नहीं फल में कभी।
होना न तू फल-हेतु भी मत छोड, देना कर्म भी।।

शुभ या अशुभ जो भी मिले उसमें न हर्ष न शोक ही।
नि:स्नेह जो सर्वत्र है, थिर बुद्धि होता है वही।।

चिन्तन विषय का, संग विषयों में बढ़ाता है तभी
फिर संग से हो कामना, हो कामना से क्रोध भी
फिर क्रोध से है मोह, सधि को मोह करता भ्रष्ट है
यह सुधि गए फिर बुद्धि विनशे, बुद्धि विनशे नष्ट है।।

सब ओर से परिपूर्ण जल निधि से सलिल जैसे सदा।
आकर समाता, किन्तु अविचल सिन्धु रहता सर्वदा।।
इस भांति ही जिसमें विषय जाकर समा जाते सभी।
वह शान्ति पाता है, न पाता काम-कामी जन कभी।।

कर्मेन्द्रियों को रोक जो मन से विषय चिन्तन करे।
वह मूढ़ पाखण्डी कहाता दम्भ निज मन में भरे।।

बिन कर्म से नित श्रेष्ठ नियमित-कर्म करना धर्म है।
बिन कर्म के तन भी न सधता कर नियत जो कर्म हैं।।

मख से करो तुम तुष्ट सुरगण, वे करें तुमको सदा।
ऐसे परस्पर तुष्ट हो, कल्याण पाओ सर्वदा।।
मख-तृप्त हो सुर कामना पूरी करेंगे नित्य ही।
उनका दिया उनको न दे, जो भोगता तस्कर वही।।

ज्यों गर्म झिल्ली से, धुँए से आग, शीशा धूल से।
यों काम से रहता ढका है, ज्ञान भी (आमूल) से।।

जो कर्म में देखे अकर्म, अकर्म में भी कर्म ही।
ये योग-युत ज्ञानी वही, सब कर्म करता है वही।।

यह योग अति खाकर न सधता है न अति उपवास से।
सधता न अतिशय नींद अथवा जागरण के त्रास से।।

जो देखता मुझमें सभी को और मुझको सब कहीं।
मैं दूर उस नर से नहीं वह दूर मुझसे है नहीं।।

तुम्हें कृष्ण कहूँ या राम

तुम्हें कृष्ण कहूँ या राम कहूँ
चित्तचोर किशोर कहूँ स्वामी।
गोविन्द कहूँ घनश्याम कहूँ
या कहूँ तुम्हें अर्न्तयामी।।
नन्दलाल कहूँ गोपाल कहूँ
या कहूँ यादवों के स्वामी।
हरि कहूँ यशोदालाल कहूँ
या कहूँ तुम्हें अर्न्तयामी।।
गइयों के कहूँ ग्वालों के कहूँ
या कहूँ तुम्हें ब्रज के स्वामी।
गोधन के कहूँ भक्तन के कहूँ
या कहूँ तुम्हें अन्तर्यामी।।
कहूँ सूरदास की भक्ति के
या योग विरक्ति के स्वामी।
गीता माँ की शक्ति कह दूँ
या कहूँ तुम्हें अन्तर्यामी।
कहूँ निराकार साकार कहूँ
कहूँ ब्रह्म या ज्योति कहूँ स्वामी।
पृथ्वी कह दूँ आकाश कहूँ
या कहूँ तुम्हें अन्तर्यामी।।
मीराँ के कहूँ द्रोपदी के कहूँ
या अर्जुन के कह दूँ स्वामी।
गणिका के कहूँ या सुदामा के
या कहूँ तुम्हें अन्तर्यामी।।
रुकमणि के कहूँ राधा के कहूँ
या कहूँ गोपियों के स्वामी।
दाऊ के कहूँ उद्धव के कहूँ
या कहूँ तुम्हें अन्तर्यामी।।
मथुरा के कहूँ गोकुल के कहूँ
या कहूँ द्वारिका के स्वामी।
इस तन के कहूँ या मन के कहूँ
या कहूँ तुम्हें अन्तर्यामी।।
वैभव कह दूँ सम्मान कहूँ
या कहूँ तुम्हें जग के स्वामी
मैं वेद कहूँ या पुराण कहूँ
या कहूँ तुम्हें अन्तर्यामी।।

आना सुन्दर श्याम

आना सुन्दर श्याम हमारे हरि कीर्तन में
आप भी आना श्याम राधे को लाना।
आकर राश रचाना हमारे हरि कीर्तन में।।
आप भी आना श्याम अर्जुन को लाना।
गीता का ज्ञान सुनाना हमारे हरि कीर्तन में।।
आप भी आना श्याम नारद को लाना।
वंशी मधुर बजाना हमारे हरि कीर्तन में।।
आप भी आना श्याम ग्वालों को लाना।
आकर माखन लुटाना हमारे हरि कीर्तन में।।
आप भी आना श्याम उद्धव को लाना।
वेदों का ज्ञान सुनाना हमारे हरि कीर्तन में।।
आप भी आना श्याम गोपियों को लाना।
वंशी की तान सुनाना हमारे हरि कीर्तन में।।

एक झोली में फूल भरे हैं

एक झोली में फूल भरे हैं
एक झोली में काँटे रे, कोई कारण होगा–2
तेरे बस मे कुछ भी नहीं
ये तो बाँटने वाला बाँटे रे, कोई कारण होगा–2
- पहले बनती है तकदीर
फिर बनते हैं शरीर
ये तो प्रभु की कारीगरी है
तू क्यों है गम्भीर, अरे कोई कारण होगा–2
- धानका बिस्तर मिल जाये पर
नींद को तरसे नैन
काँटों पर भी सोकर आये
किसी के मन को चैन, अरे कोई कारण होगी–2
- मन्दिर मस्जिद में भी जाकर कभी न पावे ज्ञान
कभी–मिले मिटी में मोती
पत्थर में भगवान, कोई कारण होगा–2
- सागर से भी बुझती नहीं है कभी किसी की प्यास
एक ही बूँद से हो जाती है
कभी तो पूरण आस, कोई कारण होगा–2
- नाग भी डस ले तो मिल जाये
किसी को जीवनदान
चींटी से भी मिट सकता है
किसी का नामोनिशान, कोई कारण होगा–**2**

बंगला अजब बना दरवेश

बंगला अजब बना दरवेश
जिसमें नारायण प्रवेश
इस बंगले के नौ दरवाजे
बीच पवन का खम्भा
आवत जावत कोई न दीखे
ये भी बड़ा अचम्भा . . . . बंगला
इस बंगले में सुरता नाचे
मनवा ढोल बजाये
सुरत–निरत का बजाके बाजा
राग छत्तीसों गाये . . . . बंगला
चार तत्त्व की भीत उठाई
पाँच तत्त्व का गारा
रोम रोम की छप्पर छाया
चिन गया चेजनहारा . . . . बंगला
दास कबीर यह चरखा चलता
आठ पहर इकतारा
वर्ण वर्ण के सूत कते जहाँ
मच रहया छोर झंझारा . . . . बंगला

करमाँ की रेखा टारी रे नाहिं टरै।

करमाँ की रेखा टारी रे नाहिं टरै।
विधना, की रेख टारी नाहिं टरै॥

लख घोड़ा लख पालकी रे सिर पे छतर फिरै।
हरिशचन्द्र सतवादी राजा नीच के नीर भरै।।

दशरथ जी के ताल में रे सरवन नीर भरै।
लगा बाण जब राजा जी का राम ही राम करै।।

गुरु वशिष्ठ महामुनी ज्ञानी लिख–लिख लगन धरै
सिया का हरण मरण दशरथ का बन–बन राम फिरै।।

पाँचों पाण्डल अधिक स्नेही उन घर भीड़ पड़ै।
कीचक आण सतावै बन में श्याम सहाय करै।।

कित फन्दा कित पारदी रे कितवो मिरग चरै।
के धरती का तोड़ा हो फंदे में आन फंसै।।

तीन लोक भावी के बस में भावी बसन करै।
सूरदास होणी सो होगी परख सोच करै।।

धन धन भोलेनाथ

धन धन भोलेनाथ लुटा दिये तीन लोक एक पल भर में
ऐसा दीन दयाल मेरा दाता भरे खजाना पल भर में
प्रथम वेद ब्रह्मा को दे दिया बने, वेद के अधिकारी
अपने पास तनै कुछ नहीं राख्या, रखा तो खप्पर कर में.
अमृत तो देवताओं के दे दिया आप हलाहल पान किया
ब्रह्मज्ञान दे दिया उसे जिसने शिव तेरा ध्यान किया
भगीरथ को गंगा दे दई सब जग ने असनान किया
बड़े-बड़े पापियों का तुमने पल भर में कल्याण किया
आप नशे में मस्त रहो और पियो भग नित खप्पर में ...
लंकागढ़ रावण को दे दिया बीस भुजा दस शीश दिये
श्रीराम को धनुषबाण वो तुमने ही जगदीश दिये
मनमोहन को मुरली दे दई मोर मुकुट बख्शीश दिये
मुक्ति होय काशी के वास में भक्ति बिसवा बीस दिये
अपने तन पर वस्त्र नहीं है मस्त रहो बाघम्बर में ...
नारद को तनै दे दई वीणा और गन्धर्वों को राग दिया
ब्राह्मण को कर्मकाण्ड और सन्यासी को त्याग दिया
जिस पर कृपा आप की हौवे उन सबको अनुराग दिया
जिसने गाया उसी ने पाया महादेव तुमको मन में ...

लेके गौरा जी को साथ

लेके गौरा जी को साथ भोले भोले भोलानाथ
काशी नगरी से आये हैं शिवशंकर
नन्दी पे सवार हो के डमरू बजाते-
चले आ रहे हैं भोले हरि गुण गाते
पहनें नर मुण्डों की माल-ओढ़े ऊपर से मृगछाल ... काशी नगरी से
हाथ में त्रिशूल लिये भस्मी रमाये-
झोली गले में डाले गोकुल में आये
पहुँचे नन्द जी के द्वार शिवजी बोले बारम्बर... काशी नगरी से
कहाँ है यशोदा तेरा कृष्ण कन्हैया
दरस करा दो माता लेऊँ मैं बलैया
सुनकर नारायण अवतार आया हूँ मैं थारे द्वारा ... काशी नगरी से
देखके यशोदा बोली जाओ जाओ जाओ
द्वारे ये हमरे नहीं डमरू बजाओ
देखेगा सर्पों की माल डर जायेगा मेरा लाल ... काशी नगरी से
हँसके वो जोगी बोला सुनो महारानी
दरस करा दो होगी बड़ी मेहरबानी
दरसकरा दो एक बार देखूँ है कैसा सुकुमार ... काशी नगरी से
सोता है कन्हैया मेरा नहीं मैं जगाऊँ
तेरी बातों में बाबा हरगिज ना आऊँ
मेरा नन्हा सा गोपाल तू कोई जादू देगा डाल ... काशी नगरी से
इतना सुनके भोला हँसा खिलखिला के
बोला यशोदा से डमरू बजा के
देखो जाके अपना लाल, आने को है वो बेहाल ... काशी नगरी से
इतने में आये मोहन मुरली बजाते
ब्रह्मा नारद भी जिनका पार न पाते
वो ही गोकुल में है ग्वाल-घर घर नाच रहा गोपाल ... काशी नगरी से

''काँटे से जैसे काँटा निकलता है उसी तरह वासना ही
वासना को निकाल बाहर करती है।''

भरोसा है मुझे तेरा

भरोसा है मुझे तेरा, मुझे तेरा सहारा है
मैं सच कहती हूँ ओ बाबा तू प्राणों से भी प्यारा है

तू बेशक देखले आकर मेरी दुनिया निराली है
मैं जिस दुनिया में रहती हूँ तेरी सूरत बसाली है
तेरे इक आसरे पर ही मेरा चलता गुजारा है

ये मैं ही जानती हूँ किस तरहाँ कटते हैं दिन मेरे
किसी को क्या खबर क्या हाल है मेरा सिवा तेरे
मगर ना हौंसला मैंने मुसीबत में भी हारा है

ना बुद्धि है ना भुजबल है ना अपनों का सहारा है
मैं भजती हूं सदा तुझको ना कोई और प्यारा है
सिवा तेरे नहीं दामन किसी आगे पसारा है

मैं इस दुनिया में रहकर भी दुनिया से अलग रहती
इसी कारण तो दुनिया को मैं अच्छी ही नहींलगती
'राज' दासी ने सब छोड़ा लिया तेरा सहारा है

'मेरी' तो एक ही बाबा तेरे चरणों में है अरजी
ना आवे गर्भ में दासी तेरी हो जाय गए मरजी
सभी पुण्यों को मैंने तो इसी मरजी पे वारा है।।

कभी राम बनके कभी

कभी राम बनके कभी श्याम बनके।
चले आना बालाजी चले आना।।

तुम राम रूप में आना
माता साथ ले के धनुष हाथ लेके
चले आना बालाजी चले आना।।

तुम श्याम रूप में आना
राधा साथ लेके मुरली हाथ लेके
चले आना बालाजी चले आना।।

तुम शिव के रूप में आना
गौरां साथ ले के डमरू हाथ लेके
चले आना बालाजी चले आना।।

तुम विष्णु रूप में आना
लक्ष्मी साथ ले के चक्र हाथ लेके
चले आना बालाजी चले आना।।

तुम गणपति रूप में आना
रिद्धि साथ लेके सिद्धि साथ लेके
चले आना बालाजी चले आना।।

तुम सद्गुरु रूप में आना
शक्ति साथ लेके भक्ति साथ लेके
चले आना बालाजी चले आना।।

बनवारी रे

बनवारी रे, जीने का सहारा तेरा नाम रे।
मुझे दुनिया वालों से क्या काम रे।।

झूठी दुनिया झूठे बन्धन
झूठी है ये माया
झूठा साँस का आनाजाना
झूठी है ये काया
ओ साँचा-साँचा तेरा नाम रे . . . . बनवारी रे!

रंग में तेरे रंग गई गिरधर
छोड़ दिया जग सारा
बन गई तेरे प्रेम की जोगन
लेकर मन इकतारा
ओ मुझे प्यारा-प्यारा तेरा नाम रे . . . . बनवारी रे!

दर्शन तेरा जिस दिन पाऊँ
हर चिन्ता मिट जाये
जीवन मेरा इन चरणों में
आस की ज्योति जलाये
ओ मेरी बाँह पकड़ ले श्याम रे . . . . बनवारी रे!

मधुर मुरली की तानों से

मधुर मुरली की तानों से
रिझाना किसको आता है
गिरि छोटीसी ऊँगली पर
उठाना किसको आता है।
मारकर कंस पापी को
किया दु:ख दूर दुनिया का
पिता माता को बन्धन से
छुड़ाना किसको आता है।
अजामिल, सदन इत्यादि
महापापी थे जो भारी
उन्हें पापों से बन्धन से
छुड़ाना किसको आता है।
मेरे बाँके बिहारी की
अजब लीला निराली है
अरज इस 'दास' की सुनली
ना गाना किसको आता है।

श्री राधे गोविन्दा

श्रीराधे गोविन्दा मन भज ले हरि का प्यारा नाम है
गोपाला हरिका प्यारा नाम है नन्दलाला हरि का प्यारा नाम है
मोर मुकुट सिर गल बनमाला
केसर तिलक लगाये-2
वृन्दावन ही कुञ्जगलिन में-सबको नाच नचाये
ओ हो सबको नाच नचाये
श्री राधे गोविन्दा मन भज ले हरि का प्यारा नाम है।
यमुना किनारे धेनु चरावे
माधव मदनमुरारी-2
मधुर मुरलिया जब ही बजावे-हर ले सुध बुध सारी
ओ हो हर ले सुधबुध सारी
श्री राधे गोविन्दा मन भज ले हरि का प्यारा नाम है।
गिरधर नागर कहती है 'मीरा'
'सूर' को श्यामल भाया-2
'तुकाराम' और 'नामदेव' ने विट्ठल विट्ठल गाया
ओ हो विट्ठल विट्ठल गाया
श्री राधे गोविन्दा मन भज ले हरि का प्यारा नाम है।
राधा शक्ति बिना ना कोई
श्याम के दर्शन पावे-2
आराधन कर राधे-राधे कान्हा दौड़े आवें
ओ हो कान्हा भागे आवें
श्री राधे गोविन्दा मन भज ले हरि का प्यारा नाम है।

तेरी पतली कमरिया में श्याम

तेरी पतली कमरिया में श्याम लिपट जाऊँ पट बन के
पीत मुकुट मकराकृत कुण्डल
तेरे कपोलों में श्याम।।लिप.।।
वृन्दावन की कुञ्ज गलिन में
तेरे चरणों में श्याम।।लिप.।।
मै जमुना जल भरन जाऊँ तब
तेरे हांथो से श्याम।।लिप.।।

ईश्वर से करते जाना प्यार

ईश्वर से करते जाना प्यार हो नादान मुसाफिर
नैया को करते जाना पार हो नादान मुसाफिर
प्रीति न तोड़ देना हिम्मत न छोड़ देना
बरना तो डूबेगा मझधार हो नादान..।।
सन्तों की संगति करना बदियों से हरदम डरना
जीते जी करना तुम उपकार हो नादान..।।
जब तक है जोस जवानी बिगड़ी हर बात बनानी
होने न पावे अत्याचार हो नादान..।।
ऋषियों की शान रखना भारत का मान रखना
देना ईश्वर को उपहार हो नादान..।।

मुझे कौन पूँछता था

मुझे कौन पूँछता था तेरी बन्दगी से पहले
मै तुझे ढूँढ़ता था इस बन्दगी से पहले।।
मै तो खास का जर्रा था और क्या थी मेरी हस्ती।
मै थपेड़े खा रहा था तूफा में जैसे कस्ती।।
दर-दर भटक रहा था तेरी बन्दगी से पहले।।
मै तो था जहाँ पे ऐसे जैसे खाली शप होती।
मेरी बढ़ गई है कीमत तूनू भर दिये हैं मोती।।
तुझे मिल गया पुजारी मुझे मिल गया ठिकाना।।
यों जो जहाँ में लाखों तेरे जैसा कौन होगा।
तू रहमतों का दरिया तेरे जैसा कौन होगा।।
मजा क्या था जिन्दगी में तेरी बंदगी से पहले।।

मेरा कोइ न सहारा बिन तेरे

मेरा कोई न सहारा बिन तेरे
घनश्याम सँवरिया मेरे।।
तुम दीन बन्धु हितकारी
हम आये शरण तिहारी
काटो जनम-मरण के फेरे।।टेक।।
विषयों के जरल में फस कर
मोह माया के पाश में कस कर
दुख पाए मैं नाथ घनेरे।।टेक।।
हमदीन हीन संसारी
आशा इक नाथ तिहारी
तेरे चरण कमल के चेरे।।टेक।।
तुमने लाखों पापी तारे
नहिं कोइ गुण दोष बिचारे
खड़ा भिक्षुक द्वार पे तेरे।।टेक।।

बजरंग बली के नाम को भजते ही जाइए

बजरंग बली के नाम को भजते ही जाइए
मिलता रहेगा आपको जो कुछ भी चाहिए।।
गर भाव की हो चाह तो भजनों को गाइये।
काया का कष्ट दूर हो मन से मनाइये।।टेक।।
भजनो की गंगा बह रही गोते लगाइये।
मन में बसाके नाम को जपते ही जाइये।।टेक।।
बाबा के कदमों के तले सारे ही सुख पले।
इक ये सांचा नाम है रटते ही जाइये।।टेक।।
उलझन भरी ये मुस्किलें बाबा पे छोंड़ दो।
चिन्ता फिकर को छोंड़ कर मन से बुलाइये।।टेक।।

जय जय राधा रमण हरि बोल

जय जय राधा रमण हरि बोल
जय जय राधा रमण हरि बोल
नव नागर नवल छैल रसिया
प्यारो कान्हा है मेरो मन बसिया।
करै कालिन्दी कूल किलोल
जय जय राधा रमण हरि बोल।।टेक।।
अँखियन में जरद डिठौना सा,
मुसकन में जादू टोना सा।
दोनो रस के भरे हैं कपोल।
जय जय राधा रमण हरि बोल।।टेक।।
वृज नाचे उसकी किलकन पै,
कजरीली तिरछी चितवन पै।
'सुखदास' बिके हैं बिन मोल।।
जय जय राधा रमण हरि बोल।।टेक।।

कीर्तन धुनें

1–राधे गोविन्दा जै जै राधे गोविन्दा ।
नटवर नागर नन्दा जै जै राधे गोविन्दा ।।
2–राधे राधे गोविन्द गोविन्द राधे ।
गोविन्द राधे गोपाल राधे ।।
3–श्री राधे श्याम राधे राधे राधे प्रिया प्रिया ।
राधे राधे प्रिया प्रिया श्यामा श्यामा प्रिया प्रिया ।।
4–हरी शरणं हरी शरणं हरी शरणं हरी शरणम्।।
5–गोविन्द मेरो है गोपाल मेरो है ।
श्री बाँके विहारी नन्द लाल मेरो है ।।
6–बाँके बिहारी जय हो तुम्हारी ।
कुंज विहारी जय हो तुम्हारी ।।
7–नमो भगवते वासुदेवाय ।
वासुदेवाय मेरो नन्दनन्दनाय ।।
8–भज गोविन्द गोविन्द गोपाला ।
भज मुरली मनोहर नन्द लाला ।।
9–श्री मन्नारायण नारायण नारायण ।।
10–राजा राम राम राम सीता राम राम ।।
11–श्रीराधे गोविन्द भजमन श्री राधे।।
12–हरे रामा रामा राम हरे रामा राम ।
13–राजा राम राम राम सीता राम राम ।
14–हरे रामा रामा राम हरे रामा राम ।।

मेरी बांके बिहारी से प्रीत ये दुनिया जान गयी 2
हाय ये दुनिया जान गयी हाय हाययें दुनिया जान गयी
बांके बिहारी के बाके.2नैना 2बांके 2नैना ये मोटे नैना
मेरी कुन्ज बिहारी से प्रीत ये दुनिया जान गयी

卐

महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ।।

अशेषसंसारविहारविहीन–
मादित्यगं पूर्णसुखाभिरामम् ।
समस्तसाक्षिं तमसःपरस्ता–
न्नारायणं विष्णुमहं भजामि ।।

शिव समान दाता नहीं विपद विदारण हार।
लज्जा सब की राखियो नन्दी के असवार।।
शृंगी शूली धूर्जटे पुण्डलीश त्रिपुरार।
वृषा कपर्दी मान हर मृत्युंजय का मार।।
मोसम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुवीर।
अस विचार रघुवंश मणिं हरहुँ विषम भव वीर।।
जय जय श्री राधारमण जय जय नवल किशोर।
जय गोपी चित चोर प्रभु जय जय माखन चोर।।
राधे मेरी स्वामिनी मैं राधे को दास।
जनम जनम मोहि दीजियो श्रीवृन्दावन को वास।।
प्रनवउँ पवन कुमार खल बन पावक ज्ञान घन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम शर चापधर।।
मोर मुकुट कटि काछिनी कर मुरली उर माल।
यह बनिक मो मन बस्यो सदा बिहारी लाल।।
पाग बनी पटुका बन्यो बन्यो लाल को वेष।
जै जै कुञ्जबिहारी लाल की दौड़ आरती देख।।
श्री राधा मुख चन्द्र के चंचल चारु कपोर।
मेरी ओर निहारिये नटवर नन्दकिशोर।।
राम नाम मणि दीप धरु, जेहिं देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरौ ज्यों चाहसि उजियार।।
भक्ति सुतन्त्र सकल सुख खानी।
बिनु सत्संग न पावहिं प्रानी।।
पुण्य पुंज बिनु मिलहिं नहिं संता।
सत् संगति संसृति कर अन्ता।।
अर्थ न धर्म न काम रुचि गति न चहौं निर्वाण।
जनम जनम रति राम पद यह वरदान न आन।।
वृन्दावन सो वन नहीं नन्द ग्राम से ग्राम।
वंशी वट सो वट नहीं श्रीराम कृष्ण सो नाम।।
राधे तू बड़ भगिनी कौन तपस्या कीन्ह।
तीन लोक तारन तरन सो तेरे आधीन।।
वृन्दावन के वृक्ष को मरम न जाना कोय।
डाल डाल अरु पात मे श्री राधे राधे होय।।
गुरु मूरति मुख चन्द्रमा सेवक नयन चकोर।
अष्ट प्रहर निरखत रहूँ श्री गुरु चरणन की ओर।।
बन्दहुँ श्रीगुरु के चरण श्रीरामदेशिकाचार्य ।
जिनके पदरज की कृपा से होत सकल मम काज।।
वन्दहुँ श्रीगुरु के चरण श्री रोहिणी प्रपन्नाचार्य ।
जिनके पद बन्दन किए होत सकल मम काज ।।
भक्ति भक्त भगवंत गुरु चतुर नाम वपु एक।
इनके पद वन्दन किये नाशत विघ्न अनेक।।

।। जय श्रीकृष्ण ।।

दत्तात्रेय के चौबीस गुरु

–एक बार यदु नाम के राजा ने एक अवधूत को मस्ती से विचरते देखकर पूछा:

जनेषु दह्यमानेषु कामलो भदवाग्निना।
न तप्ससेऽग्निना मुक्तो गङ्गाम्भःस्थ इव द्विपः॥

''संसार में सभी लोग काम और लोभ की आग से जल रहे हैं। पर आपको देखकर लगता है कि आप तक उनकी आंच भी नहीं पहुंच पाती। ऐसा लगता है कि वन में आग लगी होने पर कोई गंगा के जल के भीतर जा खड़ा हो। ऐसा क्यों?''

अवधूत थे दत्तात्रेय महाराज। बोले: मैंने बहुत से गुरु किये हैं। उनसे सीख लेकर मैं इस तरह मुक्त होकर विचरता हूं। मेरे गुरु हैं:

पृथिवी वायुराकाशमापोऽग्निश्चन्द्रमा रविः।
कपोतोऽजगरः सिन्धुः पतङ्गो मधुकृद् गजः॥
मधुहा हरिणो मीनः पिङ्गला कुररोऽर्भकः।
कुमारी शरकृत् सर्प ऊर्णनाभिः सुपेशकृत्॥

पृथिवी, वायु, आकाश, जल, अग्नि, चन्द्रमा, कबूतर, अजगर, समुद्र, पतंग, मधुमक्खी, हाथी, शहद ले जाने वाला, हरिण, मछली, पिंगला वेश्या, कुरर पक्षी, बालक, कुमारी कन्या, बाण बनाने वाला, सांप मकड़ी और भृङ्गी कीड़ा।

भूतैराक्रम्यमाणोऽपि धीरो दैववशानुगैः।
तद् विद्वान्न चलेन्मार्गादन्वशिक्षं क्षितेर्व्रतम्॥

1. पृथ्वी से मैंने धीरज रखने की, क्षमा करने की सीख ली। लोग उस पर कितना ज्यादा उत्पाद करते हैं! कोई नींव खोदता है, कोई कुंआ। कई उस पर फावड़ा चलाता है, कोई कुदाली। परन्तु पृथिवी न तो किसी से बदला लेती है, न रोती-चिल्लाती है। उसी तरह बुद्धिमान् आदमी को कभी अपना धीरज नहीं खोना चाहिए, भले ही दूसरे लोग उस पर हमला करते रहें।

शश्वत्परार्थसर्वेहः परार्थैकान्तसम्भवः।
साधुः शिक्षेत भूभृत्तो नगशिष्यः परात्मताम्॥

पृथ्वी के ही विकार हैं पेड़ और पहाड़। उनका जन्म दूसरों का उपकार करने के लिए ही हुआ है। हमें उनसे परोपकार करने की सीख लेनी चाहिए।

2. वायु से मैंने यह सीख ली कि काम भर के लिए ही विषयों का उपभोग करे। जैसे प्राण वायु को जरूरत भर ही भोजन चाहिए। बाहरी हवा से यह सीखा कि वह अच्छी-बुरी सभी जगह जाती है, पर सदा शुद्ध रहती है। हम भी किसी गुण-दोष में लिपटें नहीं।

3. आकाश से यह सीख ली कि चाहे जो हो, सदा अछूता रहे। पानी बरसे, आग लगे, अन्न पैदा हो, बादल आयें, चले जायं–किसी से कोई लगाव नहीं। चाहे जो काल

हो, चाहे जो पैदा हो, चाहे जो मरे, आत्मा सबसे अछूती है।

तेजोऽबन्नमयै-र्भावै-र्मेघाद्यै-र्वायुनेरितैः।
न स्पृश्यते नभस्तद्वत् कालसृष्टैर्गुणैः पुमान्॥

4. पानी से यह सीख लो कि वह जैसा स्वच्छ, चिकना, मधुर और पवित्र करने वाला होता है, वैसे ही हम भी बनें।

5. आग से यह सीख लो कि सब कुछ पचा लेना चाहिए और किसी चीज का संग्रह नहीं करना चाहिए।

स्वमायया सृष्टमिदं सदसल्लक्षणं विभुः।
प्रविष्ट ईयते तत्तत्स्वरूपोऽग्निरिवैधसिः॥

अग्नि टेढ़ी, सीधी-लम्बी-चौड़ी लकड़ियों में लगी होने पर उनकी जैसी ही जान पड़ती है, पर वैसी है नहीं; उसी तरह सबमें व्यापक आत्मा नाना रूपों में दीखती है, पर भीतर एक ही है।

6. चन्द्रमा से यह सीख ली कि कलाओं के घटने-बढ़ने पर भी वह जैसे एक ही रहता है, घटता-बढ़ता नहीं, वही हाल आत्मा का है। जन्म से मृत्यु तक शरीर घटता-बढ़ता है, पर आत्मा पर उसका कोई असर नहीं होता।

7. सूर्य से यह सीख ली कि किसी में आसक्त न हो। जो ले, पानी की तरह बरसा दे। भिन्न-भिन्न पात्रों में सूर्य भिन्न-भिन्न दिखाई देता है, पर है वह एक ही। वही हाल आत्मा का है।

8. कबूतर से यह सीख ली कि किसी से अधिक स्नेह नहीं करना चाहिए। नहीं तो बड़ा कष्ट भोगना पड़ता है।

नातिस्नेहः प्रसङ्गोवा कर्तव्यः क्वापि केनचित्।
कुर्वन्विन्देत सन्तापं कपोत इव दीनधीः॥

कबूतरों का एक जोड़ा था। कई बच्चे थे। एक दिन मां-बाप बाहर थे, तभी बहेलियों ने बच्चों को जाल में फंसा लिया। लौटकर मां ने देखा, तो वह भी दुखी होकर बच्चों के साथ जाल में जा गिरी। बाद में कबूतर भी। बहेलिया सबको बांधकर ले गया।

9. अजगर से यह सीख ली कि मीठा-फीका, थोड़ा-बहुत जो भी मिल जाय, उसी में संतोष माने।

ग्रासं सुमृष्टं विरसं महान्तं स्तोकमेव वा।
यदृच्छयैवापतितं ग्रसेदाजगरोऽक्रियः॥

10. समुद्र से यह सीख ली कि सदा प्रसन्न रहे, गंभीर रहे; फिर चाहे ज्वार आये, चाहे भाटा।

11. पतंगे से यह सीख ली कि रूप के मोह में पड़कर आग में नहीं कूदना चाहिए।

12. भौरे से यह सीख ली कि सार जहां भी मिले, वहां से उसे ग्रहण कर ले।

13. हाथी से यह सीख ली कि काठ की बनी हुई स्त्री को भी न छुए, नहीं तो नाना पकार के दुःख भोगने पड़ेंगे।

14. मधु का छत्ता तोड़ने वाले से यह सीख ली कि किसी चीज का संग्रह न करे। 'खाय न खरचे सूम धन, चोर

सवै लै जाय!''

न देयं नोपभोग्यं च लुब्धैर्यद् दुःखसञ्चितम्।
भुङ्क्ते तदपि तच्चान्यो मधुहेवार्थविन्मधुः॥

15. हरिण से यह सीख ली कि संगीत के, नाच-गाने के फेर में कभी न फंसे, नहीं तो बुरी तरह फंसना पड़ेगा।

16. मछली से यह सीख ली कि जीभ के स्वाद में कभी न पड़े। मछली कांटे में लगे मांस के टुकड़े के फेर में फंसकर प्राण गंवा देती है, वही हाल स्वाद के लोभ पुरुषों का होता है:

जिह्वयाऽतिप्रमाथिन्या जनो रसविमोहितः।
मृत्युमृच्छत्यसद्बुद्धिर्मीनस्तुर्बाडशैर्यथा॥

जीभ को जीतना जरूरी है। जिसने जीभ को जीत लिया, उसने सारी इन्द्रियां जीत लीं।

तावत् जितेन्द्रियों नस्यात् विजितान्येन्द्रियः पुमान्।
न जयेद् रसनं यावद् जितं सर्वं जिते रसे॥

17. पिंगला नाम की वेश्या से यह सीख ली कि किसी प्रिय प्राणी या पदार्थ की आशा बड़ा दुःख देती है। पिंगला जब तक पुरुष को और उससे मिलने वाले धन की आशा लगाये रही, तब तक बहुत दुःखी रही। जब उसने उसकी आशा छोड़ दी, तो सुख से सोयी:

आशा हि परमं दुःखं नैराश्यं परमं सुखम्।
यथा संछिद्य कान्ताशां सुखं सुष्वाप पिङ्गला॥

18. कुरर पक्षी से यह सीख ली कि किसी वस्तु का, किसी चीज का संग्रह नहीं करना चाहिए। उससे भारी दुःख भोगना पड़ता है। जो अकिंचन है, वह बहुत सुखी रहता है।

परिग्रहो हि दुःखाय यद् यत्प्रियतमं नृणाम्।
अनन्तं सुखमाप्नोति तद्विद्वान् यस्त्वकिञ्चनः॥

कुरर पक्षी कहीं से मांस का एक टुकड़ा पा गया था। वह उसे अपनी चोंच में दबाये लिये जा रहा था। दूसरे पक्षियों ने उसे देखा। वे उसे चोंचों से मारने लगे। लाचार उसने वह टुकड़ा फेंक दिया। उसकी सारी झंझट कट गयी।

19. बालक से यह सीख ली कि हमें सदा निश्चिन्त और आनन्द में मग्न रहना चाहिए।

20. कुमारी कन्या से यह सीख ली कि कई लोग साथ रहने से झगड़ा होता है, इसलिए अकेला ही विचरे। वह कुमारी धान कूट रही थी। बाहर मेहमान बैठे थे। चूड़ियां बजने लगीं। यह देख कन्या ने अपने हाथों की चूड़ियां तोड़ दीं। केवल एक-एक चूड़ी रखी, तब बिना आवाज के धान कुट गया।

21. बाण बनाने वाला एक कारीगर बाण बना रहा था। उसके पास से बाजे-गाजे के साथ एक बारात निकल गयी। उसे पता ही न चला। उससे मैंने यह सीख ली कि आसन और प्राणायाम से, अभ्यास और वैराग्य से मन को वश में

कर ले, फिर उसे एक लक्ष्य में लगा दें, तो चित्त स्थिर हो जाता है।

मन एकत्र संयुञ्ज्याज्जितश्वासो जितासनः।
वैराग्याभ्यासयोगेन ध्रियमाणमतन्द्रितः।।

22. सांप से यह सीख ली कि उसकी तरह अकेला विचरे, कहीं पर अपना घर न बनाये।

23. मकड़ी से यह सीख ली कि परमेश्वर भी उसी की तरह जाला फैलाकर उसी में विहार करते हैं, फिर उसे निगल जाते हैं।

24. भृंगी से यह सीख ली कि एकाग्र होकर मनको लगा दे तो जिसमें मन लगा हो, खुद भी वह वैसा ही बन जाता है। यह मन लगाना चाहे प्रेम से हो, चाहे द्वेष से, चाहे भय से, मन लगाया कि काम बनाः

यत्र तत्र मनो देही धारयेत् सकलं धिया।
स्नेहाद् द्वेषात् भयाद् वापि याति तत्तत्सरूपताम्।।

॥ इति॥